राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

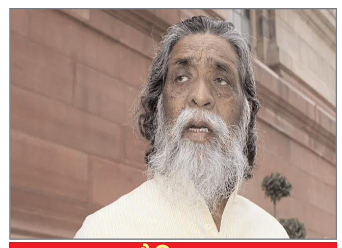

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें........ 9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, रविवार, 05 अप्रैल 2026

वर्ष 14, अंक 343, पृष्ट 04, मूल्य: 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

फ्री मेडिकल हेल्थ एजुकेशन कैंप का ग्राम खानपुर सादात में किया गया आयोजन...03

असम में डबल इंजन सरकार को खींचने के लिए रथी-महारथियों के उमड़ी भीड...04

ग्रेटर नोएडा के छपरौला गांव का आतंकी कनेक्शन, लोकेश-विकास कैसे रच रहे थे साजिश? एक-एक कर अर ने खोली परतें

ग्रेटर नोएडा के बादलपुर क्षेत्र के छपरौला गांव में उस समय हड़कंप मच गया, जब क्क ज्ञ्स ने गांव के रहने वाले लोकेश उर्फ पपला पंडित और उसके दोस्त विकास गहलावत को आतंकी गतिविधियों में शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया. गिरफ्तारी की जानकारी मिलते ही पूरे गांव में सनसनी फैल गई. लोग हैरान रह गए कि जिस युवक को वे सामान्य जिंदगी जीने वाला समझते थे, वह देश विरोधी गतिविधियों में शामिल था. गांव के लोग बताते हैं कि लोकेश ज्यादा मिलनसार नहीं था. अक्सर अपने ही काम में व्यस्त रहता था. ज्यादातर उसका समय अपने दोस्त विकास के साथ बीतता था. यह दोनों मजदूरी और वेटर का काम करते थे. दोनों नशे के आदि थे. हालांकि किसी को भी इस बात का अंदाजा नहीं था कि वह इतने बड़े नेटवर्क से जुड़े सकते हैं

पाकिस्तानी हैंडल से संपर्क

P ATS की जांच में यह बात सामने आया कि लोकेश व विकास दोनों पाकिस्तानी हैंडल के संपर्क में थे. उसके निर्देश पर दोनों काम कर रहे थे. जांच एजेंसियों को शक है कि इस नेटवर्क का मकसद देश में अशांति फैलाना था. खासकर विधानसभा चुनाव से पहले माहौल बिगड़ने की साजिश रची जा रही थी. पूछताछ में सामने आया कि लोकेश और उससे जुड़े अन्य लोग भीड़भाड़ वाली जगहों पर जाकर रेकी करते थे. यह भी जानकारी मिली है कि ये लोग नेताओं की रैलियों और बड़ी जनसभाओं में शामिल होकर भीड़ और सुरक्षा व्यवस्था का आकलन करते थे, ताकि किसी बड़ी साजिश को अंजाम दिया जा सके.

जेवर एयरपोर्ट की जनसभा में पहुंचा

जांच के दौरान एक अहम जानकारी यह भी सामने आई कि लोकेश हाल ही में जेवर एयरपोर्ट के उद्घाटन के दौरान आयोजित बड़ी जनसभा में भी शामिल हुआ था. एजेंसियां इस बात की जांच कर रही हैं कि वह केवल अकेला इस जनसभा में शामिल हुआ था या कोई और भी साथ में मौजूद था. इसके अलावा रेलवे स्टेशन और अन्य संवेदनशील स्थानों पर लोकेश की मौजूदगी की बात सामने आई है. माना जा रहा कि यह सभी गतिविधियां रेकी का हिस्सा थीं, जिसके जरिए नेटवर्क को जरूरी जानकारी मिली थी.

लोकेश कैसे जुड़ा आतंकी नेटवर्क से?

लोकेश और विकास का परिवार आर्थिक रूप से कमजोर है. लोकेश ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था. छोटे-मोटे काम करके अपना गुजारा कर रहा था. वह ज्यादातर विकास के साथ रहता था, क्योंकि विकास और लोकेश दोनों वेटर और मजदूरी का काम करते थे. स्थानीय लोगों के अनुसार, लोकेश पैसों के लिए किसी भी तरह का काम करने को तैयार रहता था. धीरे-धीरे उसकी यह आदत उसे गलत संगत में ले गई. माना जा रहा कि इसी दौरान वह साकिब उर्फ डेविल और अरबाब के संपर्क में आया, जिन्होंने उसे आतंकी नेटवर्क से जोड़ दिया. जांच एजेंसियां यह भी पता लगाने में जुटी हैं कि उसका संपर्क सोशल मीडिया या किसी स्थानीय लिंक के जरिए हुआ या फिर किसी ने उसे सीधे इस नेटवर्क में शामिल किया.

क्या करता थे लोकेश और विकास?

UP ATS की पूछताछ में यह भी सामने आया कि लोकेश और उसके साथ जुड़े लोग सीधे तौर पर किसी वारदात को अंजाम देने के बजाय पहले जानकारी जुटाने का काम करते थे. लोकेश और विकास यह दोनों ग्रेटर नोएडा में रहकर आसपास के इलाकों में नेताओं की रैलियों, भीड़भाड़ वाले इलाकों, आयोजनों और रेलवे स्टेशन जैसे संवेदनशील स्थानों पर जाकर रेकी करते थे. वहां की सुरक्षा व्यवस्था, पुलिस की तैनाती और लोगों की आवाजाही की जानकारी इकठ्ठा कर अपने नेटवर्क तक पहुंचाते थे. इस तरह की गतिविधियां किसी बड़ी साजिश की तैयारी का हिस्सा माना जा रही हैं, जिसे समय रहते ATS ने पकड़ लिया.

कभी सोचा नहीं था बेटा ऐसा करेगा

लोकेश के पिता पूरी तरह टूट चुके हैं. उन्होंने बताया कि कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि बेटा इस तरह के कामों में शामिल हो सकता है. परिवार की हालत भले ही खराब रही हो, लेकिन उन्होंने हमेशा अपने बच्चों को सही रास्ते पर चलने की सीख दी. कुछ दिन पहले पुलिस घर आई थी और पूछताछ करके चली गई थी, लेकिन उस समय उन्हें मामले की गंभीरता का अंदाजा नहीं था. वहीं विकास की मां सदमे में हैं. गांव के लोगों में डर और हैरानी दोनों का माहौल है. लोग यह सवाल उठा रहे हैं कि आखिर इतने बड़े नेटवर्क से जुड़े दोनों लोग उनके बीच कैसे रह रहे थे. किसी को भी इनकी भनक तक नहीं लगी. फिलहाल ATS साकिब, अरबाब, लोकेश और विकास इन सबसे लगातार पूछताछ कर रही है. एजेंसियां इस पूरे नेटवर्क की गहराई तक पहुंचने की कोशिश कर रही हैं, ताकि इसके अन्य सदस्यों और उनके मकसद का पता लगाया जा सके. जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ेगी, इस मामले में और भी चौंकाने वाले खुलासे सामने आने की संभावना है, जिससे यह स्पष्ट होगा कि यह नेटवर्क कितना बड़ा और इसके पीछे कौन-कौन लोग शामिल थे?

कांग्रेस चाहती है कि पश्चिम एशिया के देश भारत को दुश्मन समझें... केरल में बोले पीएम मोदी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

केरलम विधानसभा चुनाव के बीच शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तिरुवल्ला में एक जनसभा को संबोधित किया. इस दौरान इस दौरान पीए मोदी ने कांग्रेस पर बड़ा हमला बोला. उन्होंने कहा कि कांग्रेस चाहती है कि वेस्ट एशिया के देश भारत को अपना दुश्मन समझ लें. हम यहां ऐसा कोई बयान दे दें और गल्फ कंट्री से भारतीयों को बाहर निकाल दिया जाए. इसलिए कांग्रेस गल्फ कंट्री को नाराज करने वाले बयान दे रही है. कांग्रेस चाहती है कि पैनिक फैले और उसे मोदी को गाली देने का मौका मिल जाए. पीएम मोदी ने कहा, 'अरे, राजनीति अपनी जगह है, चुनाव आते-जाते रहेंगे. मेरे लिए केरल के लोगों की सुरक्षा सबसे बड़ा काम है और मैं इसके लिए प्रतिबद्ध हूं.' वहीं, पीएम मोदी ने राज्य की मौजूदा सरकार ष्ठस्न्न पर भी जमकर हमला बोला. उन्होंने कहा कि अपने वाली 4 मई को दशकों के कुशासन का अंत होगा. पीएम मोदी ने कहा कि जनसभा में मौजूद भीड़ ने केरलम में बदलाव तय कर दिया. केरलम में अब एनडीए की सरकार बनेगी. जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा, मैं पहले भी यहां आया हूं लेकिन इस बार हवा का रुख कुछ और है. केरलम में अब सबसे बड़ा परिवर्तन होने जा रहा है. 9 अप्रैल को वोटिंग और 4 मई को दशकों के कुशासन के अंत की घोषणा होगी. यह पक्का हो चुका है कि ष्ठस्न्न सरकार के जाने का काउंटडाउन शुरू हो चुका है. केरलम में पहली बार भाजपा-NDA की सरकार आने वाली है. पीएम मोदी ने LDF पर हमला बोलते हुए कहा कि इस पार्टी ने कभी केरलम के लोगों की परवाह नहीं की है. केरलम LDF और

यूडीएफ के बीच फंसा है. इस बार केरलम की जनता दोनों ही पार्टियों को बाहर का रास्ता दिखाएगी. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आगे कहा कि केरलम को ईश्वर ने अपार संभावनाएं और संसाधन दिए हैं. यहां समुद्र में ब्लू इकोनॉमी के अवसर हैं. पर्यटन के क्षेत्र में कितनी संभावनाएं हैं लेकिन फिर भी केरलम विकास की दौड़ में बाकी राज्यों से पीछे होते जा रहा है. इसके वजह मौजूदा सरकार है जो बरसो से प्रदेश पर काबिज है. पीएम मोदी ने कहा कि अब बदलाव का समय आ गया है. इस बार केरल की जनता बदलाव चाहती है, जनसभा में मौजूद भीड़ इसका प्रमाण है.

कांग्रेस और लेफ्ट से सावधान रहने की जरूरत

पीएम मोदी ने महिलाओं के समर्थन को अपनी ताकत बताते हुए कहा कि राज्यभर में एनडीए के पक्ष में माहौल दिख रहा है. उन्होंने उम्मीदवार अनुप को समर्पित और मेहनती बताते हुए जनता से समर्थन की अपील की. रैली के दौरान उन्होंने सबरीमाला और भगवान अयप्पा का भी उल्लेख किया गया और इसे सांस्कृतिक जुड़ाव से जोड़ा. इसके साथ ही पीएम मोदी ने यह भी बोले कि केरल के लोगों को कांग्रेस और लेफ्ट से सावधान रहने की जरूरत है.

डबल इंजन सरकार बनने रुकावटें होंगी खत्म, मोदी की गारंटी

पीएम मोदी ने कहा कि ष्ठस्न्न-ष्ठस्न्न की सरकारों ने कभी भी इस क्षेत्र की परवाह नहीं की है. यहां कनेक्टिंग सड़कों का हाल बेहाल है. यहां कई वर्षो से एक भी बड़ा पुल नहीं बना है, मेडिकल कॉलेज की हालत खराब है. जहां बेसिक इंफ्रास्ट्रक्चर की इतनी कमी हो वहां आपका जीवन स्तर कैसा होगा इसका हर कोई अंदाजा लगा सकता है. पीएम मोदी ने कहा कि इन सभी पर काम होगा. उन्होंने कहा कि कहा, सबरीमाला रेलवे परियोजना इस क्षेत्र में नई संभावनाओं को खोल सकता है, इससे सबरीमाला तक सीधी कनेक्टिविटी बढ़ेगी, स्थानीय व्यापार को नई गति मिलेगी, युवाओं के लिए रोजगार के नए रास्ते खुलेंगे लेकिन प्रदेश सरकार ने इस परियोजना को लटका कर रखा. तिरुवल्ला को इसका नुकसान हो रहा है. जब भाजपा की डबल इंजन सरकार आएगी तो ऐसी सभी रुकावटें हटेंगी- यह मोदी की गारंटी है.

NDA की सरकार ने काम करके दिखाया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पूर्वोत्तर में ईसाई समाज की संख्या बहुत है.इन सभी को भी विकास से जोड़ा जाएगा. उन्होंने कहा कि एक राज्य को छोड़कर पूर्वोत्तर के 7 राज्यों में NDA की सरकार है और वहां पिछले 50-60 सालों में जो काम नहीं हुआ है वह हमने करके दिखाया है. गोवा में ईसाई समाज निर्णायक है, वहां लगातार भाजपा-NDA की सरकार है. वह विकास की नई ऊंचाइयां छू रहा है. केरलम में भी NDA की सरकार बनेगी तो केरलम विकास की नई ऊंचाइयों को पाएगा. पीएम मोदी ने केरलम में NDAकी सरकार बनने से प्रदेश और यहां के लोगों का विकास होगा.

संक्षिप्त ख़बरें

MP महिला कांग्रेस की नई प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा ! इन्हें मिली जिम्मेदारी, जीतू पटवारी ने दी बधाई

मध्यप्रदेश में कांग्रेस संगठन को मजबूती देने के उद्देश्य से महिला कांग्रेस की प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा कर दी गई है। इस नई कार्यकारिणी में विभिन्न जिलों और वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए संगठनात्मक संतुलन साधने का प्रयास किया गया है। प्रदेश कांग्रेस नेतृत्व ने सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों को बधाई देते हुए उम्मीद जताई है कि वे संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत बनाने में अहम भूमिका निभाएंगे। कार्यकारिणी में शामिल नेताओं को महिला सशक्तिकरण, सामाजिक न्याय और पार्टी की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि आगामी चुनावों को देखते हुए यह नियुक्तियां काफी अहम हैं। महिला कांग्रेस की नई टीम बूथ स्तर तक संगठन को सक्रिय करने और महिलाओं के बीच पार्टी की पकड़ मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। प्रदेश नेतृत्व ने स्पष्ट किया है कि संगठन में सक्रियता, समर्पण और प्रदर्शन के आधार पर ही जिम्मेदारियां दी गई हैं, जिससे कांग्रेस को भविष्य में चुनावी लाभ मिल सके। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि आगामी चुनावों को देखते हुए यह नियुक्तियां काफी अहम हैं। महिला कांग्रेस की नई टीम बूथ स्तर तक संगठन को सक्रिय करने और महिलाओं के बीच पार्टी की पकड़ मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। प्रदेश नेतृत्व ने स्पष्ट किया है कि संगठन में सक्रियता, समर्पण और प्रदर्शन के आधार पर ही जिम्मेदारियां दी गई हैं, जिससे कांग्रेस को भविष्य में चुनावी लाभ मिल सके।

'घायल हूं इसलिए घातक हूं... झूठ को बेनकाब किया जाएगा', राघव चड्ढा ने आप नेताओं के आरोपों पर दी सफाई

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पंजाब से राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने एक वीडियो जारी कर अपनी ही पार्टी के नेताओं द्वारा लगाए जा रहे आरोपों पर सफाई दी है. फेसबुक पर लाइव आकर चड्ढा ने एक-एक करके सभी आरोपों का जवाब दिया है और यह स्पष्ट किया है कि उनके खिलाफ लगाए गए आरोप बेबुनियाद और चुनिंदा हैं. इनका मकसद संसद में उनकी आवाज को दबाना है. चड्ढा ने कहा कि मेरे खिलाफ एक अभियान चलाया जा रहा है. पहले मुझे लगा कि इसका जवाब नहीं देना चाहिए लेकिन फिर लगा कि एक झूठ को सौ बार बोला जाए तो वो सच लगने लगता है. राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने कहा कि आम आदमी पार्टी की तरफ से उन पर तीन बड़े आरोप लगाए गए हैं. पहला आरोप है कि जब विपक्ष सदन से वॉकआउट करता है तो राघव चड्ढा वहीं बैठे रहते हैं. ये सरासर झूठ है. एक दिन ऐसा बताया जाए जब विपक्ष ने वॉकआउट किया हो और मैंने उनका साथ न दिया हो. संसद में हर जगह सीसीटीवी कैमरे हैं, आप उसकी फुटेज निकालकर दिखा

दीजिए. दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा. वह हमेशा से विपक्ष के साथ रहे हैं और हर मुद्दे पर खुलकर बोले हैं. साथ ही सत्ता पक्ष से सवाल भी किए हैं.

चीफ इलेक्शन कमिश्नर मामले में सारा दोष उन पर ही क्यों?

राघव ने कहा कि उन पर दूसरा आरोप लगाया गया कि 'मैंने चीफ इलेक्शन कमिश्नर को हटाने वाली याचिका पर साइन नहीं किए. ये आरोप सरासर गलत है. उन्हें आप के किसी नेता ने इस याचिका पर साइन करने के लिए नहीं कहा. साथ ही राज्यसभा में पार्टी के दस सांसद हैं, जिनमें से छह या सात सांसदों ने खुद ही इस याचिका पर साइन नहीं किया. अब इसमें मेरी क्या गलती है. सारा दोष उन पर ही क्यों. इस याचिका के लिए राज्यसभा में केवल 50 साइन चाहिए थे यानी 105 विपक्षी सांसदों में से 50 से ये याचिका पूरी हो जाती.'

ट्रैक रिकॉर्ड उठाकर देख लीजिए हर मुद्दे उठाए

चड्ढा ने कहा कि तीसरा आरोप जो उन पर लगाया गया वो ये था कि वो डर गए हैं और इसलिए वो बेकार मुद्दे उठाते हैं. 'मैं बता दूं कि मैं संसद में चीखने चिल्लाने, गाली देने या माइक तोड़ने नहीं गया. मैं वहां जनता के मुद्दे उठाने गया हूं. मैंने कौन से मुद्दा नहीं उठाए. जीएसटी से लेकर पानी तक, पंजाब के पानी से लेकर दिल्ली की हवा की बात की. बेरोजगारी से लेकर महंगाई तक के मुद्दे उठाए. मेरा ट्रैक रिकॉर्ड उठाकर देख लीजिए.मैं संसद में इंपेक्ट क्रिएट करने गया हूं. हां एक बात कहता हूं जो लोग उन पर आरोप लगा रहे हैं, मैं उन्हें कहना चाहता हूं कि हर झूठ को बेनकाब किया जाएगा. हर सवाल का जवाब दिया जाएगा. मैं घायल हूं इसलिए घातक हूं. '

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को हटाने होंगे अनिरुद्धाचार्य से जुड़े फर्जी कंटेंट, कोर्ट ने दिया निर्देश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

दिल्ली हाईकोर्ट ने मशहूर कथावाचक अनिरुद्धाचार्य, जिन्हें पूकी बाबा के नाम से भी जाना जाता है, उनके व्यक्तित्व अधिकारों की रक्षा करते हुए एक अहम अंतरिम आदेश जारी किया है. कोर्ट ने अनिरुद्धाचार्य के नाम, आवाज और छवि का अनधिकृत उपयोग करके मीम्स, वीडियो या किसी भी अन्य सामग्री, जिसमें एआई या डीपफेक सामग्री शामिल है बनाने पर रोक लगा दी है. 30 मार्च को जस्टिस तुषार राव गेडेला ने अनिरुद्धाचार्य द्वारा दायर एक मुकदमे के जवाब में यह आदेश सुनाया, जिसमें बिना अनुमति उनके नाम, आवाज और छवि के इस्तेमाल पर रोक लगा दी गई. कोर्ट ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म स्द्धह्लड्ड, ङ्ग और त्रश्शद्द्यद्ग को भी निर्देश दिया है कि वो वादी द्वारा पहचाने गए उन कंटेंट को हटा दें जिनमें गैरकानूनी रूप से उनके व्यक्तित्व का उपयोग या अनुकरण किया गया है.

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को कोर्ट का निर्देश

हाईकोर्ट ने स्पष्ट किया कि अनधिकृत रूप से अनिरुद्धाचार्य की पहचान का उपयोग कर बनाए गए मीम्स, वीडियो या किसी भी प्रकार के कंटेंट चाहे वह AI या

डीपफेक तकनीक से तैयार किया गया हो कानूनी उल्लंघन माना जाएगा. कोर्ट ने यह भी निर्देश दिया कि Meta, X और Google जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ऐसे सभी आपत्तिजनक कंटेंट को तुरंत हटाएं.

'यह मामला सिर्फ पैरोडी का नहीं...'

हाईकोर्ट ने कहा कि याचिकाकर्ता एक प्रसिद्ध और व्यापक रूप से स्वीकृत सार्वजनिक हस्ती हैं. जिनका व्यक्तित्व, प्रतिष्ठा और सद्भावना दशकों के आध्यात्मिक उपदेशों के माध्यम से बनी है. कोर्ट ने कहा कि यह मामला सिर्फ पैरोडी का नहीं है, बल्कि इससे अनिरुद्धाचार्य की छवि और प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंच सकता है. कोर्ट ने कहा कि किसी व्यक्ति के नाम, आवाज, छवि या हाव-भाव का बिना अनुमति इस्तेमाल करना उसके व्यक्तित्व और प्रचार अधिकारों का सीधा उल्लंघन है. साथ ही कोर्ट ने यह भी कहा कि अगर तुरंत राहत नहीं देने से अपूरणीय क्षति होगी जिसकी भरपाई आर्थिक रूप से नहीं की जा सकती. यानी नुकसान हो की भरपाई पैसों से संभव नहीं होगी.

अनिरुद्धाचार्य का आरोप

दरअसल कथावाचक अनिरुद्धाचार्य ने अपनी याचिका में आरोप लगाया था कि कई संस्थाएं बिना अनुमति, लाइसेंस या सहमति के उनकी शख्सियत का दुरुपयोग कर रही हैं, जिसका मकसद अवैध व्यावसायिक लाभ कमाना और उनकी साख, व्यावसायिक मूल्य और प्रतिष्ठा का अनुचित लाभ उठाना है. न्होंने यह भी कहा कि कुछ भ्रामक और मनगढ़ंत सामग्री प्रसारित की जा रही है, जिससे यह झूठा दावा किया जा रहा है कि वो धोखाधड़ी वाली योजनाओं का समर्थन करते हैं या उनसे जुड़े हुए हैं.

मर्डर-रंगदारी सहित 18 केस... गाजियाबाद गैंगवार में गैंगस्टर राहुल चौधरी को लगीं 5 गोलियां, 30 मिनट तक गाड़ी चलाकर अस्पताल पहुंचा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गाजियाबाद के मोदीनगर इलाके में गुरुवार रात एक सनसनीखेज फायरिंग की घटना सामने आई. फिरौती के एक मामले में जमानत पर बाहर आए 35 वर्षीय राहुल चौधरी पर सड़क किनारे बने एक ढाबे के बाहर कथित तौर पर कुछ हमलावरों ने ताबड़तोड़ फायरिंग की. हैरानी की बात यह रही कि गर्दन, सीने, पेट और पैर में पांच गोलियां लगने के बावजूद वह खुद अपनी स्कॉर्पियो चलाकर 25 किलोमीटर से अधिक दूर अस्पताल पहुंचा. पुलिस के अनुसार, यह वारदात गुरुवार रात करीब 9:30 बजे ह्वा-58 के पास सीकरी कलां इलाके में स्थित स्वागत ढाबा के बाहर हुई. मोदीनगर के ACP भास्कर वर्मा ने बताया कि घटनास्थल की 49 सेकंड की ष्टष्टञ्जङ्क फुटेज पुलिस को मिली है.

3 हमलावरों की ताबड़तोड़ फायरिंग

फुटेज में देखा गया कि दो व्यक्ति एक स्कूटर के पास खड़े थे. इसी दौरान राहुल चौधरी अपनी स्कॉर्पियो से वहां पहुंचा. कुछ ही सेकंड बाद एक व्यक्ति ने ड्राइवर साइड का दरवाजा खोला और थोड़ी देर बाद काली शर्ट और नीली जींस पहने तीसरे हमलावर कार के पास पहुंचकर राहुल पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी. घटना को अंजाम देने के बाद सभी आरोपी मौके से फरार हो गए.

गाड़ी चलाकर पहुंचा अस्पताल

गंभीर रूप से घायल राहुल चौधरी करीब 30 मिनट तक खुद गाड़ी चलाकर संजय नगर स्थित निजी अस्पताल में इलाज के लिए पहुंचा. अस्पताल कर्मचारियों के मुताबिक, राहुल बिना किसी मदद के मुख्य गेट तक पहुंचे, गाड़ी से बाहर निकले, मदद के लिए आवाज लगाई और फिर वहीं जमीन पर गिर पड़े. इसके बाद उनका इमरजेंसी ऑपरेशन किया गया और उन्हें आईसीयू में भर्ती किया गया, जहां उनकी हालत गंभीर बनी हुई है.

क्या था मामला?

पुलिस के अनुसार शुरुआती जांच में सामने आया है कि राहुल चौधरी ढाबे पर दो लोगों से 75 हजार रुपये लेने गए थे, जिनके साथ वह पहले से संपर्क में थे. उनकी पत्नी करिश्मा ने आरोप लगाया है कि उनके पति को विनय वशिष्ठ और अरविंद सैनी ने फोन कर मिलने के लिए बुलाया था. पहले उन्हें घर बुलाया गया, लेकिन सड़क संकरी होने की बात कहने पर ढाबे पर मिलने को कहा. करिश्मा के अनुसार, बातचीत के करीब 15 मिनट बाद जब राहुल जाने लगे, तभी अरविंद सैनी ने कार का दरवाजा खोलकर उनसे पूछा कि भैया, आप दोबारा कब आएंगे? इसी दौरान विनय वशिष्ठ, अरविंद सैनी, अश्विनी चौहान और कुछ अज्ञात लोगों ने उन पर गोलियां चला दीं.

पहले से रची गई थी साजिश

उन्होंने आरोप लगाया कि इस हमले की साजिश जलबीर पंडित, रवि वाल्मीकि और पीतम सैनी ने रची थी. पुलिस के मुताबिक, राहुल चौधरी पर भी हत्या, हत्या के प्रयास और रंगदारी जैसे मामलों में कुल 18 केस दर्ज हैं. इनमें से सात मामलों में वह बरी हो चुके हैं, जबकि छह महीने पहले रंगदारी के एक मामले में उन्हें गिरफ्तार किया गया था. वह दो महीने पहले ही जमानत पर बाहर आए थे. करिश्मा की शिकायत के आधार पर पुलिस ने सात नामजद और दो अज्ञात आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया है. पुलिस ने आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पांच टीमें गठित की हैं. साथ ही आसपास के CCTV फुटेज भी खंगाले जा रहे हैं ताकि हमलावरों की पहचान और साजिश में शामिल अन्य लोगों का पता लगाया जा सके.

फिरौती मांगने वाले गिरोह का पर्दाफाश, मेडिकल स्टोर मालिक को धमकी फिर शूटआउट की थी प्लानिंग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बटाला पुलिस ने डेरा बाबा नानक में एक मैडीकल स्टोर के मालिक से फिरौती मांगने वाले गिरोह का पर्दाफाश करते हुए मैडीकल स्टोर पर गोलियां चलाने की साजिश रच रहे 2 युवाओं को पिस्टल और जिंदा रौंद सहित गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। एस.एस.पी. बटाला डा. महताब सिंह ने बताया कि डेरा बाबा नानक में एक मैडीकल स्टोर के मालिक को 29 मार्च को एक समाजविरोधी तत्व द्वारा फोन करके उनसे 5 लाख रुपए की फिरौती की मांग की गई थी जिस संबंधी पुलिस द्वारा थाना डेरा बाबा नानक में केस भी दर्ज किया गया था। उन्होंने कहा कि इस मामले की जांच हेतु पुलिस

टीमों का गठन किया गया था। उन्होंने कहा कि जांच के दौरान पुलिस को सूचना मिली कि नोइस पुत्र नजीर मसीह निवासी पखोके टाहली साहिब और राजविन्द्र सिंह उर्फ राजा पुत्र भुपिन्द्र सिंह निवासी तरसिका हाल निवासी पंडोरी वडैच अमृतसर ने डेरा बाबा नानक के क्षेत्र में मैडीकल स्टोर पर गोलियां चलानी हैं और इनके पास हथियार भी हैं।

विदेशी हैंडलर के इशारे पर चलने वाली थी गोली

उन्होंने कहा कि बटाला पुलिस ने उक्त युवाओं को वारदात करने से पहले ही पिस्टल और जिंदा रौंद सहित गिरफ्तार किया है। उन्होंने कहा कि पूछताछ के दौरान उक्त युवाओं ने बताया कि उन्होंने डेरा बाबा नानक में एक मैडीकल स्टोर पर गोलियां चलानी थी, यह वारदात विदेश में बैठे समाज विरोधी तत्व के कहने पर करनी थी और उसने ही उनको हथियार मुहैया करवाया था। एस.एस.पी. ने कहा कि फिलहाल पुलिस द्वारा उक्त युवाओं को माननीय अदालत में पेश करके इनका रिमांड हासिल किया जा रहा है और इनसे और भी खुलासे होने की उम्मीद है।

सम्यक्त्व के भाव जागृत हों, आत्म-जागरण, समत्व और सच्चे दर्शन की ओर एक गहन यात्रा

मनुष्य जीवन केवल भौतिक उपलब्धियों का नाम नहीं है, बल्कि यह आत्मा की पहचान और उसके वास्तविक स्वरूप की खोज का माध्यम है। जब तक मनुष्य अपने भीतर छिपे सत्य को नहीं पहचानता, तब तक वह बाहरी संसार में भटकता रहता है। सम्यक्त्व, अर्थात् सम्यक् दर्शन, इस आत्म-जागरण की प्रथम सीढ़ी है। यह वह अवस्था है, जहाँ से आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप की ओर अग्रसर होती है और जीवन का सच्चा उद्देश्य स्पष्ट होने लगता है।

जैसे सागर का जल ऊपर से खारा प्रतीत होता है, परंतु गहराई में उतरने पर वही जल मधुर हो जाता है, ठीक उसी प्रकार दर्शन का विषय भी प्रारंभ में सामान्य व्यक्ति को नीरस या कठिन लग सकता है। लेकिन जैसे-जैसे साधक इसकी गहराई में उतरता है, उसे इसमें आनंद और शांति का अनुभव होने लगता है। यह अनुभव बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक होता है, जो आत्मा को स्थिरता और संतोष प्रदान करता है।

सम्यक्त्व का अर्थ केवल किसी सिद्धांत को स्वीकार करना नहीं है, बल्कि यह आत्मा की एक ऐसी जागृत अवस्था है, जहाँ मिथ्यात्व अर्थात् गलत दृष्टिकोण का प्रभाव समाप्त हो जाता है। जब सम्यक् दर्शन आत्मा में प्रकट होता है, तब वह सूर्य के समान प्रकाशित होता है, जिसके सामने अज्ञान रूपी अंधकार टिक नहीं पाता। यह स्थिति सहज नहीं होती, बल्कि इसके लिए आत्म-पुरुषार्थ, साधना और निरंतर प्रयास आवश्यक है।

आज के समय में मनुष्य बाहरी दिखावे और भौतिक सुखों में इतना उलझ गया है कि वह अपने वास्तविक स्वरूप को भूल चुका है। वह अपने शरीर, पद, प्रतिष्ठा और संपत्ति को ही अपना सब कुछ मान बैठता है। यही आसक्ति उसे सत्य से दूर ले जाती है। यदि सम्यक्त्व की प्राप्ति करनी है, तो सबसे पहले इस देह और संसार के प्रति अत्यधिक मोह को त्यागना होगा। जब तक मनुष्य अपने भीतर वैराग्य और समत्व की भावना विकसित नहीं करता, तब तक वह आत्मा के सच्चे स्वरूप को नहीं जान सकता।

सम्यक्त्व कोई बाहरी वस्तु नहीं है, जिसे किसी से प्राप्त किया जा सके। यह तो आत्मा का स्वाभाविक गुण है, जो अज्ञान के कारण दबा हुआ है। जब मनुष्य अपने भीतर की चेतना को जागृत करता है, तब यह गुण स्वतः प्रकट हो जाता है। इसके लिए किसी बाहरी आडंबर, दिखावे या कर्मकांड की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि सच्ची साधना और आत्म-निरीक्षण की आवश्यकता होती है।

आत्म-विश्वास इस मार्ग का एक महत्वपूर्ण आधार है। बिना आत्म-विश्वास के कोई भी व्यक्ति आध्यात्मिक प्रगति नहीं कर सकता। जब मनुष्य अपने भीतर की शक्ति को पहचानता है, तब वह किसी भी परिस्थिति में विचलित नहीं होता। जीवन में मित्र और शत्रु दोनों मिलते हैं, परंतु जिसका आत्म-विश्वास दृढ़ होता है, वह किसी से भयभीत नहीं होता। वह हर स्थिति में संतुलित और स्थिर रहता है।

इतिहास और धर्मग्रंथों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जहाँ आत्म-विश्वास और सम्यक् दृष्टि के कारण व्यक्तियों ने असंभव को संभव कर दिखाया। यह आत्म-विश्वास ही वह शक्ति है, जो मनुष्य को कठिनाइयों से लड़ने और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। जब मनुष्य अपने भीतर इस शक्ति को जागृत कर लेता है, तब वह बाहरी परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होता, बल्कि स्वयं अपने जीवन का निर्माता बन जाता है।

समत्व की भावना भी सम्यक्त्व का एक महत्वपूर्ण अंग है। जीवन में सुख और दुःख, लाभ और हानि, मान और अपमान आते रहते हैं। जो व्यक्ति इन सभी परिस्थितियों में समान भाव रखता है, वही सच्चा साधक है। जब मनुष्य समत्व को अपनाता है, तब वह कर्मों के बंधन से मुक्त होने लगता है। क्योंकि कर्मों का बंधन राग और द्वेष के कारण ही होता है, और समत्व इन दोनों को समाप्त कर देता है।

शरीर के प्रति अत्यधिक मोह भी सम्यक्त्व की प्राप्ति में बाधा है। यह शरीर नश्वर है और रोगों का घर है। जब तक मनुष्य इसे ही अपना सब कुछ मानता रहेगा, तब तक वह दुःखों से मुक्त नहीं हो सकता। लेकिन जब वह समझता है कि वह शरीर नहीं, बल्कि आत्मा है, तब उसके दृष्टिकोण में परिवर्तन आने लगता है। यही परिवर्तन उसे सम्यक् दर्शन की ओर ले जाता है।

कर्मों का सिद्धांत भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है। प्रत्येक जीव अपने कर्मों का फल भोगता है। कोई भी व्यक्ति अपने कर्मों से बच नहीं सकता। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने विचारों और भावों को शुद्ध रखें। क्योंकि जैसा हमारा चिंतन होगा, वैसा ही हमारा जीवन बनेगा। यदि हमारे भाव शुद्ध और सम्यक् होंगे, तो हमारे कर्म भी शुद्ध होंगे और उनका फल भी शुभ होगा।

महत्त्व वस्तुओं का नहीं, बल्कि भावों का होता है। यदि किसी के पास देने के लिए कुछ नहीं है, लेकिन उसके मन में देने की भावना है, तो वह भी महान है। वहीं यदि किसी के पास सब कुछ है, लेकिन उसके भीतर दया और करुणा नहीं है, तो उसका जीवन अधूरा है। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने भीतर अच्छे भावों को विकसित करें।

सम्यक्त्व का जागरण जीवन को एक नई दिशा देता है। यह हमें सिखाता है कि सच्चा सुख बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि हमारे भीतर है। जब हम अपने भीतर झांकते हैं और आत्मा के स्वरूप को पहचानते हैं, तब हमें वास्तविक शांति और आनंद की प्राप्ति होती है। यही सम्यक् दर्शन का सार है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि सम्यक्त्व केवल एक आध्यात्मिक अवधारणा नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक कला है। यह हमें सिखाता है कि कैसे हम अपने जीवन को संतुलित, शांत और सार्थक बना सकते हैं। जब हमारे भीतर सम्यक्त्व के भाव जागृत होते हैं, तब हमारा जीवन स्वतः ही कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो जाता है। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने भीतर झांकें, अपने विचारों को शुद्ध करें और आत्मा की ओर उन्मुख हों। यही सम्यक्त्व की सच्ची साधना है और यही जीवन का वास्तविक उद्देश्य भी।

कांतिलाल मांडोत

पश्चिम बंगाल की कानून-व्यवस्थाः चुनावी उफान के बीच उठते सवाल

पश्चिम बंगाल में पिछले डेढ़ दशक से ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली तृणमूल कांग्रेस की सरकार का शासन रहा है। वर्तमान समय में राज्य विधानसभा चुनावों का माहौल गर्म है, और ऐसे में राजनीतिक बयानबाजी तथा तनाव का बढ़ना स्वाभाविक भी माना जा सकता है। किंतु हाल ही में मालदा में घटी घटना जहाँ सात न्यायिक अधिकारियों को उग्र भीड़ द्वारा कई घंटों तक बंधक बनाकर रखा गया ने राज्य की कानून-व्यवस्था पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए हैं ? लोकतंत्र में विरोध प्रदर्शन नागरिकों का अधिकार है, लेकिन जब यह विरोध हिंसक रूप ले ले और न्यायिक अधिकारियों जैसी संवैधानिक संस्थाओं से जुड़े लोगों की सुरक्षा खतरे में पड़ जाए, तब यह केवल राजनीतिक असहमति का मामला नहीं रह जाता, बल्कि प्रशासनिक विफलता का संकेत बन जाता है। इस घटना के संदर्भ में सर्वोच्च अदालत की कड़ी प्रतिक्रिया भी इस बात को रेखांकित करती है कि स्थिति कितनी गंभीर रही होगी।

चुनावी दौर में राजनीतिक दलों के बीच आरोप-प्रत्यारोप तेज होना सामान्य है, परंतु कानून-व्यवस्था को बनाए रखना किसी भी राज्य सरकार की प्राथमिक जिम्मेदारी होती है। यह अपेक्षा की जाती है कि प्रशासन निष्पक्ष और प्रभावी तरीके से कार्य करे, ताकि आम नागरिकों का भरोसा कायम रहे। यदि प्रशासनिक निर्णय राजनीतिक समीकरणों से प्रभावित होते प्रतीत हों, तो यह लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता को कमजोर कर सकता है। साथ ही, राज्य में अवैध घुसपैठ, मतदाता सूची में संशोधन (जैसे स्क्रूटनी प्रक्रिया) और पहचान से जुड़े मुद्दे भी समय-समय पर चर्चा में रहे हैं। ये विषय न केवल राजनीतिक विमर्श को प्रभावित करते हैं, बल्कि सामाजिक संतुलन और सुरक्षा से भी जुड़े होते हैं। इसलिए इन पर पारदर्शिता और तथ्यों के आधार पर संवाद आवश्यक है, न कि केवल राजनीतिक ध्रुवीकरण।

पश्चिम बंगाल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध राज्य रहा है यह गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर और बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय जैसी विभूतियों की धरती है, जिन्होंने देश की एकता और सांस्कृतिक चेतना को नई दिशा दी। ऐसे राज्य में कानून-व्यवस्था और सामाजिक सौहार्द को बनाए रखना और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। अंततः, सत्ता परिवर्तन लोकतंत्र का स्वाभाविक हिस्सा है, लेकिन कानून-व्यवस्था पर नियंत्रण किसी भी सरकार की सबसे बड़ी कसौटी होता है। यदि इस दिशा में कमी दिखाई देती है, तो उसे सुधारना शासन की जिम्मेदारी है। चुनावी माहौल चाहे जितना भी गर्म क्यों न हो, प्रशासनिक संतुलन और विधि का शासन सर्वोपरि रहना चाहिए क्योंकि यही लोकतंत्र की असली ताकत है।

अरविंद रावल

होर्मुज संकट के बीच वैश्विक तनाव और संवाद की आवश्यकता, होरमुज संकट का समाधान बातचीत से ही सम्भव

मध्य पूर्व में चल रहा तनाव अब केवल क्षेत्रीय संघर्ष नहीं रह गया है, बल्कि यह एक ऐसा वैश्विक संकट बन चुका है जिसका असर पूरी दुनिया पर पड़ रहा है। होर्मुज जलडमरूमध्य, जो विश्व के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार मार्गों में से एक है, इस समय संघर्ष का केंद्र बना हुआ है। यहां से गुजरने वाले तेल और गैस की आपूर्ति पर पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था निर्भर करती है। ऐसे में इस क्षेत्र में किसी भी प्रकार की अस्थिरता का सीधा प्रभाव वैश्विक बाजार, महंगाई और आम जनजीवन पर पड़ता है।

हाल ही में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन बैठक में साठ से अधिक देशों ने भाग लिया, जिसमें इस संकट को सुलझाने के उपायों पर विचार किया गया। इस बैठक में भारत ने स्पष्ट रूप से कहा कि इस पूरे संकट का समाधान केवल बातचीत और शांति के माध्यम से ही संभव है। भारत का यह रुख उसकी पारंपरिक विदेश नीति के अनुरूप है, जिसमें वह हमेशा संवाद, संयम और संतुलन को प्राथमिकता देता रहा है।

भारत द्वारा यह भी बताया गया कि इस संघर्ष में अब तक केवल भारतीय नागरिकों की मृत्यु हुई है, जो विदेशी जहाजों पर काम कर रहे थे। यह तथ्य इस संकट की गंभीरता को और बढ़ा देता है, क्योंकि इससे यह स्पष्ट होता है कि युद्ध का प्रभाव सीमाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह निर्दोष लोगों की जान भी लेता है। भारत का यह बयान एक प्रकार से अंतरराष्ट्रीय समुदाय को चेतावनी भी है कि यदि समय रहते स्थिति को नियंत्रित नहीं किया गया तो इसके परिणाम और भी भयावह हो सकते हैं।

दूसरी ओर, अमेरिका और उसके सहयोगी देश इस संघर्ष को अपनी रणनीतिक दृष्टि से देख रहे हैं। अमेरिकी नेतृत्व द्वारा दिए गए बयान इस बात का संकेत देते हैं कि वे इस युद्ध को अपनी शक्ति और प्रभुत्व स्थापित करने के अवसर के रूप में देख रहे हैं। हालांकि उन्होंने बातचीत की बात भी की है, लेकिन उनके वक्तव्यों में कठोरता और चेतावनी का स्वर अधिक स्पष्ट दिखाई देता है। इस प्रकार के विरोधाभासी संकेत स्थिति को और जटिल बना देते हैं।

ईरान की ओर से भी कड़ा रुख अपनाया गया है। उसने स्पष्ट किया है कि होर्मुज जलडमरूमध्य उसके नियंत्रण में है और यह तभी खुलेगा जब उसकी शर्तों को स्वीकार किया जाएगा। यह स्थिति न केवल क्षेत्रीय बल्कि वैश्विक स्तर पर तनाव को बढ़ाने वाली है। यदि यह मार्ग लंबे समय तक बाधित रहता है, तो तेल की आपूर्ति में भारी कमी आ सकती है, जिससे विश्वभर में ऊर्जा संकट उत्पन्न हो सकता है।

इस संघर्ष का एक और गंभीर पहलू मानवीय संकट है। विभिन्न देशों में हजारों लोगों की जान जा चुकी है और लाखों लोग घायल या विस्थापित हुए हैं। अस्पतालों, स्कूलों और अन्य बुनियादी ढांचों को भारी नुकसान पहुंचा है। यह स्थिति दर्शाती है कि युद्ध केवल सैनिकों के बीच नहीं होता, बल्कि इसका सबसे बड़ा खामियाजा आम नागरिकों को भुगतना पड़ता है।

संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने भी इस स्थिति पर चिंता व्यक्त की है और युद्धविराम की अपील की है। उनका मानना है कि यदि यह संघर्ष जारी रहा तो इसके परिणामस्वरूप वैश्विक आर्थिक मंदी, खाद्य संकट और सामाजिक अस्थिरता जैसी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। विशेष रूप से विकासशील देशों पर इसका प्रभाव अधिक गंभीर होगा, क्योंकि वे पहले से ही आर्थिक चुनौतियों से जूझ रहे हैं।

भारत का रुख इस पूरे परिदृश्य में संतुलित और दूरदर्शी दिखाई देता है। उसने न तो किसी पक्ष का समर्थन किया है और न ही किसी के खिलाफ आक्रामक बयान दिए हैं। इसके बजाय उसने शांति और संवाद का मार्ग अपनाने की अपील की है। यह नीति न केवल भारत के राष्ट्रीय हितों के अनुरूप है, बल्कि वैश्विक शांति के लिए भी आवश्यक है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि भारत जैसे देश, जो ऊर्जा आयात पर निर्भर हैं, इस प्रकार के संकट से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। यदि तेल की कीमतें बढ़ती हैं तो इसका सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था और आम जनता पर पड़ता है। इसलिए भारत का यह प्रयास कि स्थिति को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाया जाए, पूरी तरह से व्यावहारिक और आवश्यक है।

वर्तमान परिस्थिति यह स्पष्ट संकेत देती है कि युद्ध किसी समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सकता। इतिहास गवाह है कि युद्धों ने केवल विनाश और पीड़ा ही दी है। इसके विपरीत, संवाद और सहयोग के माध्यम से ही स्थायी शांति स्थापित की जा सकती है। इसलिए सभी देशों को अपने मतभेदों को भुलाकर एक साथ बैठकर समाधान खोजने की आवश्यकता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि होर्मुज संकट केवल एक क्षेत्रीय विवाद नहीं है, बल्कि यह पूरी मानवता के लिए एक चुनौती है। इस चुनौती का सामना केवल शक्ति प्रदर्शन से नहीं, बल्कि समझदारी, संयम और संवाद से किया जा सकता है। यदि विश्व समुदाय समय रहते सही कदम उठाता है, तो इस संकट को टाला जा सकता है और एक स्थिर तथा शांतिपूर्ण भविष्य की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

कांतिलाल मांडोत

भारत के पुनर्जागरण की तथा-कथा, देश की सर्वांगीण प्रगति का मूल राष्ट्रीय जागरण

1947 में भारत एवं पाकिस्तान ने एक साथ स्वतंत्रता की प्राप्ति की थी किंतु पाकिस्तान एक मुस्लिम राष्ट्र की अवधारणा धारण कर अलग दिशा में आगे बढ़ता गया जिसके फलस्वरुप आज पाकिस्तान विपन्न और गरीब देश बन गया है। दूसरी तरफ भारत एक लोकतांत्रिक, जनतांत्रिक अवधारणा की दिशा में नई-नई विकास के सोपनो को प्रतिपादित कर आगे बढ़ता गया। भारत वैश्विक स्तर पर सामरिक आर्थिक एवं अन्य विषयों पर काफी हद तक प्रगति प्राप्त कर चुका है।भारत ने आश्चर्यजनक रूप से देश को विकसित मजबूत एवं सशक्त बना दिया है ।भारतीय परिदृश्य और संदर्भ में भारत में विगत एक दशक में व्यापक तथा आमूल चूल परिवर्तन देखे गये हैं। राजनीतिक परिदृश्य में उत्तरदायित्व आधारित शासन प्रशासन-प्रणाली, सांस्कृतिक विमर्श में सनातनी सांस्कृतिक सभ्यता-गौरव की पुनर्प्राप्ति और आर्थिक नीतियों के संरचनात्मक सुधारों ने देश की दिशा और दशा तय की है। इन नई विचारधारा एवं रणनीति ने भारत को न केवल आंतरिक रूप से सशक्त किया बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी एक निर्णायक शक्ति के रूप में स्थापित किया।

भारतीय राजनीति में पिछले दो दशकों का सबसे बड़ा परिवर्तन रिपोर्ट कार्ड राजनीति का उदय रहा, जिसमें आम जनता और राजनीतिक नेताओं और दलों का मूल्यांकन उनके किए गए कार्यों और परिणामों के आधार पर कसौटी पर कसा जाने लगा है ।संवैधानिक और नीतिगत स्तर पर कई ऐतिहासिक कदम उठाए गए। 2019 में अनुच्छेद 370 का निरसन और जम्मू-कश्मीर का पुनर्गठन केंद्र की सख्त और मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति तथा विचारधारा का प्रतीक बना। तीन तलाक कानून ने मुस्लिम महिलाओं को न्याय दिलाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम रखा। वहीं नागरिकता संशोधन अधिनियम ने राष्ट्रीयता और शरणार्थी नीति पर नई विचारों की श्रृंखला को जन्म दिया। भारत की परंपरागत लोकतांत्रिक विरासत को तकनीकी रूप से सशक्त बनाने के लिए नया संसद भवन, ई-संसद और डिजिटलीकरण जैसे महत्वपूर्ण कार्य को शामिल किया गया है। दूसरी तरफ विपक्ष की भूमिका, मीडिया की स्वतंत्रता और चुनावी राजनीति में सोशल मीडिया तथा धनबल के प्रभाव ने लोकतांत्रिक विमर्श को चुनौतीपूर्ण और प्रभावशाली भी बनाया गया है।

नये भारत की संकल्पना और अवधारणा को केवल राजनीति या अर्थव्यवस्था तक सीमित परिसीमित नहीं रखा गया है बल्कि सांस्कृतिक क्षेत्र के व्यापक फलक पर भी इसका गहरा असर और परिणाम परिलक्षित हुए हैं । भारत की महान अर्वाचीन योग और आयुर्वेद जैसी परंपरा को वैश्विक स्तर प्रचारित प्रसारित कर नई अवधारणा तथा पहचान प्रदान की गई है। अयोध्या में राममंदिर निर्माण ने भारतीय परंपरा और धार्मिक-सांस्कृतिक आकांक्षाओं की विशाल अवधारणा को मूर्त रूप दिया गया है। शिक्षा और पाठ्यपुस्तकों में भारतीय आख्यानों और इतिहास को नवीन स्वरूप देने के प्रयास किए गए हैं। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को पुष्पित पल्लवित करने के प्रयासों को संपूर्ण प्रोत्साहन दिया गया। साथ ही, सांस्कृतिक कूटनीति नवीन अवधारणा के माध्यम से भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी पहचान और अधिक सुदृढ़ रूप से विस्तारित की है। हालाँकि, इस सांस्कृतिक पुनर्जागरण के साथ अनेक कठिन एवं दुष्कर चुनौतियाँ भी रहीं हैं। बहुलतावाद और अल्पसंख्यक अधिकारों पर उठते सवाल तथा परंपरा बनाम आधुनिकता की खींचतान समाज में गूढ विचार विमर्श का विषय बनी रही।

आर्थिक पुनर्जागरण के संदर्भ में यही कहा जा सकता है कि भारत की अर्थव्यवस्था ने इस दशक में उल्लेखनीय और अभूतपूर्व प्रगति प्राप्त की है । मेक इन इंडिया ने विनिर्माण और रक्षा उत्पादन को बढ़ावा दिया। जीएसटी (2017) ने कर संरचना को एकीकृत और पारदर्शी बनाया। जीएसटी को 2025 में 22 सितंबर से नवीन संशोधन कर एकदम सरल एवं स्पष्ट कर काफी हद तक सस्ता करके आम जन को बड़ी राहत पहुंचाई है। डिजिटल इंडिया, जनधन योजना और [illegible] ने वित्तीय समावेशन और नकदी रहित लेन-देन की दिशा में क्रांतिकारी बदलाव लाए।

स्टार्टअप इंडिया ने उद्यमिता और नवाचार को प्रोत्साहित किया। इसके परिणामस्वरूप भारत आज विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी सशक्त अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है। विदेशी निवेश वृद्धि, रेलवे और सड़क निर्माण में गति तथा बिजली और डिजिटल नेटवर्क का विस्तार इस आर्थिक पुनर्जागरण के प्रमुख संकेतक रहे।इसके बावजूद बेरोजगारी की समस्या, ग्रामीण-शहरी असमानता और आय-विभाजन जैसी बड़ी और गंभीर चुनौतियाँ भारत देश के आर्थिक परिदृश्य को संतुलित होने से रोकती रही हैं। कृषि सुधार अभी तक आधे अधूरे रह गए और हरियाणा पंजाब तथा अन्य प्रदेशों में किसान आंदोलनों ने यह यह साफ तथा स्पष्ट संकेत दिया कि विकास की अवधारणा सबके लिए समान रूप से सुलभ नहीं है।

भारत ने पिछले दशक में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी नई पहचान बनाई ग्लोबल साउथ के नेता के रूप में भारत की भूमिका स्पष्ट हुई। 2023 में आयोजित द्द20 सम्मेलनों में भारत ने वैश्विक मुद्दों पर संतुलित और निर्णायक नेतृत्व प्रस्तुत किया। चीन में हुए शंघाई सहयोग संगठन की बैठक में 10 महत्वपूर्ण देशों के साथ 27 देशों ने भारत चीन और रूस पर अपना विश्वास जाहिर कर यूरोपीय शक्तियों एवं मनमानी का खुला विरोध किया है, जिसमें भारत पर अमेरिका द्वारा 50% लगाए गए टैरिफ का भी खुला विरोध हुआ है। रूस, चीन और पड़ोसी देशों के साथ संतुलित कूटनीतिक संबंधों ने भारत की स्थिति को और सशक्त मजबूत किया।पिछले दस वर्षों का भारत राजनीतिक दृढ़ता, सांस्कृतिक आत्मगौरव और आर्थिक नवाचारों से परिपूर्ण रहा है। यह अवधि भारतीय लोकतंत्र को नई परिभाषा देने, सांस्कृतिक मूल्यों को पुनर्जीवित करने और आर्थिक संरचना को मज़बूत करने में महत्वपूर्ण रही। हालाँकि असमानता, बेरोजगारी और राजनीतिक ध्रुवीकरण जैसी विकराल चुनौतियाँ अब भी बनी हुई हैं, फिर भी यह कहना उचित होगा कि यह दशक भारत के लिए राजनीतिक-सांस्कृतिक-आर्थिक पुनर्जागरण का समय रहा है, जिसने भारत को वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था में निर्णायक शक्ति बना दिया है। भारत की सनातनी सांस्कृतिक विरासत, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भारत की सामरिक शक्ति में इजाफा होकर पिछले एह्लक दशक में भारतीय जनमानस की एकजुटता एवं देश के नेतृत्व की कार्य कुशलता के परिणाम स्वरूप भारत का सम्मान और कद वैश्विक परिदृश्य में काफी हद तक ऊंचा हुआ है।

संजीव ठाकुर

शिक्षक, शोध और शिक्षा - सबका नया केंद्र बनेगी एनसीईआरटी

[एनसीईआरटी अब किताबों की मेज से उठकर नीति की कुर्सी पर]

[एनसीईआरटी का डीम्ड यूनिवर्सिटी बनना क्यों है ऐतिहासिक फैसला]

जब किसी देश की शिक्षा व्यवस्था करवट लेती है, तो बदलाव केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की दिशा और दशा दोनों बदल जाती हैं। भारत की शिक्षा यात्रा में 2026 का आरंभ ऐसा ही एक निर्णायक पड़ाव बन गया है। पिछले 6 दशकों से करोड़ों विद्यार्थियों को अपनी पुस्तकों के माध्यम से मार्ग दिखाने वाली एनसीईआरटी अब 'डीम्ड-टू-बी-यूनिवर्सिटी' बनने जा रही है। अब वह केवल किताबें तैयार करने वाली संस्था नहीं रहेगी, बल्कि डिग्री प्रदान करेगी, शोध को बढ़ावा देगी, नए शिक्षकों का निर्माण करेगी और शिक्षा की नई नीतियों की आधारशिला रखेगी। यह बदलाव महज एक प्रशासनिक फैसला नहीं, बल्कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था को भीतर तक बदल देने वाली उस ऐतिहासिक क्रांति की शुरुआत है, जिसकी नींव राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने रखी थी।

1961 में स्थापित एनसीईआरटी ने दशकों तक भारतीय विद्यालयी शिक्षा की आधारशिला बनकर कार्य किया। देश के अधिकांश स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकें, पाठ्यक्रम और मूल्यांकन पद्धतियां इसी संस्था की दृष्टि से आकार लेती रहीं। इसकी किताबों ने गांव के छोटे विद्यालय से लेकर महानगरों के प्रतिष्ठित स्कूलों तक शिक्षा का एक समान आधार तैयार किया। लेकिन समय बदलने के साथ यह स्पष्ट हो गया कि केवल पाठ्यपुस्तकें तैयार कर देना पर्याप्त नहीं है। नई शिक्षा व्यवस्था को ऐसे विशेषज्ञों की जरूरत है, जो शिक्षा को गहराई से समझें, उस पर शोध करें और बदलते समय के अनुसार उसे नया स्वरूप दे सकें। यही सोच एनसीईआरटी को विद्यालयी शिक्षा की सीमाओं से आगे बढ़ाकर उच्च शिक्षा के केंद्र में ले आई।

वर्ष 2023 में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने पहली बार सार्वजनिक रूप से संकेत दिया था कि एनसीईआरटी को शोध और शिक्षक शिक्षा का राष्ट्रीय केंद्र बनाया जाएगा। लगभग 3 वर्षों की तैयारी, विशेषज्ञों की सिफारिशों और प्रशासनिक प्रक्रियाओं के बाद अब यह निर्णय अंतिम रूप लेने जा रहा है। दिल्ली स्थित एनसीईआरटी मुख्यालय के साथ-साथ अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूर और शिलांग के क्षेत्रीय संस्थान भी इस नए स्वरूप का हिस्सा बनेंगे। इसका अर्थ केवल इतना नहीं कि एनसीईआरटी का दायरा बढ़ेगा, बल्कि यह कि देश के अलग-अलग हिस्सों में शिक्षा और शोध के नए केंद्र उभरेंगे। पहली बार विद्यालयी शिक्षा और विश्वविद्यालयी शोध एक ही मंच पर साथ दिखाई देंगे।

डीम्ड यूनिवर्सिटी का दर्जा मिलने के बाद एनसीईआरटी को व्यापक शैक्षणिक अधिकार प्राप्त हो जाएंगे। अब वह स्वतंत्र रूप से डिप्लोमा, स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी स्तर तक के पाठ्यक्रम संचालित कर सकेगा। शिक्षा, मनोविज्ञान, बाल विकास, समावेशी शिक्षा, डिजिटल शिक्षण, बहुभाषी अध्ययन और शिक्षक-प्रशिक्षण जैसे विषयों में विशेष डिग्रियां दी जा सकेंगी। संस्था को अपने पाठ्यक्रम स्वयं बनाने, शैक्षणिक ऋण बैंक प्रणाली लागू करने और राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग ढांचे में शामिल होने की स्वतंत्रता मिलेगी। इसके साथ ही विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ साझेदारी, छात्र-शिक्षक आदान-प्रदान तथा नए परिसर खोलने का मार्ग भी प्रशस्त होगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि एनसीईआरटी का उद्देश्य लाभ कमाना नहीं, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता को नई ऊंचाई तक पहुंचाना होगा।

दशकों से भारतीय शिक्षा व्यवस्था दो हिस्सों में बंटी हुई दिखाई देती रही है—एक ओर स्कूल, दूसरी ओर विश्वविद्यालय। विद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली सामग्री और विश्वविद्यालयों में होने वाला शोध शायद ही कभी एक-दूसरे से जुड़ पाए। परिणामस्वरूप शोध पुस्तकालयों और रिपोर्टों तक सीमित रह गया, जबकि स्कूल पुराने ढर्रे पर चलते रहे। एनसीईआरटी का यह नया रूप अब इस दूरी को समाप्त करने वाला सशक्त सेतु बनेगा। जो विशेषज्ञ पाठ्यक्रम तैयार करेंगे, वही शिक्षक गढ़ेंगे और वही शिक्षा पर शोध भी करेंगे। इससे नई खोजें और नए विचार सीधे कक्षा तक पहुंचेंगे। बच्चों की पढ़ाई अधिक व्यावहारिक, वैज्ञानिक और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप बन सकेगी।

भारत की शिक्षा व्यवस्था में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक हमेशा से प्रशिक्षित और सक्षम शिक्षकों की कमी रही है। अनेक शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान आज भी पुराने पाठ्यक्रमों और पारंपरिक तरीकों तक सीमित हैं। ऐसे समय में एनसीईआरटी का यह नया स्वरूप शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में नई क्रांति ला सकता है। अब वह ऐसे पाठ्यक्रम प्रारंभ कर सकेगा, जिनमें डिजिटल शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शिक्षण, व्यावसायिक शिक्षा, समावेशी कक्षाएं और बहुभाषी अध्ययन जैसे आधुनिक विषय शामिल होंगे। क्षेत्रीय संस्थानों में पीजी और पीएचडी कार्यक्रम शुरू होने से युवा शोधकर्ताओं को विद्यालयी शिक्षा की वास्तविक चुनौतियों पर काम करने का अवसर मिलेगा। उनके शोध के परिणाम सीधे पाठ्यपुस्तकों और शिक्षा नीतियों में दिखाई देंगे, जिससे शिक्षा अधिक जीवंत, प्रभावी और समयानुकूल बन सकेगी।

हर बड़ा परिवर्तन अपने साथ चुनौतियां भी लाता है। एनसीईआरटी के सामने भी कई गंभीर प्रश्न हैं। कुछ शिक्षाविदों का मानना है कि यूजीसी के नियमों के अधीन आने से उसकी स्वतंत्र कार्यशैली प्रभावित हो सकती है। जिस संस्था की पहचान अब तक विद्यालयी शिक्षा से रही है, उसके लिए विश्वविद्यालयी ढांचे में ढलना आसान नहीं होगा। नए विभाग, प्रशिक्षित संकाय, शोध सुविधाएं, पर्याप्त बजट और प्रशासनिक सुधारों की आवश्यकता पड़ेगी। साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होगा कि उच्च शिक्षा की नई भूमिका निभाते हुए एनसीईआरटी अपनी मूल जिम्मेदारी, यानी स्कूल शिक्षा को मजबूत बनाने, से दूर न हो। यदि योजना, पारदर्शिता और गुणवत्ता पर बराबर ध्यान दिया गया, तो यही चुनौतियां उसकी सबसे बड़ी शक्ति बन सकती हैं।

यदि यह परिवर्तन सफल हुआ, तो आने वाले समय में एनसीईआरटी केवल एक संस्था नहीं, बल्कि भारतीय शिक्षा का सबसे बड़ा केंद्र बन जाएगी। एक ओर देश का विद्यार्थी उसकी किताबों से पढ़ेगा, दूसरी ओर उसी संस्था का शोधकर्ता नई शिक्षा नीति तैयार करेगा और वही शिक्षक गढ़े जाएंगे, जो आने वाली पीढ़ियों को दिशा देंगे। यह ऐसा मॉडल होगा, जहां शिक्षा, शोध और प्रशिक्षण एक-दूसरे से सीधे जुड़े होंगे। विकसित भारत का सपना केवल उद्योग, तकनीक और अर्थव्यवस्था से पूरा नहीं होगा; उसकी सबसे मजबूत आधारशिला शिक्षा ही बनेगी। एनसीईआरटी का यह नया स्वरूप उसी आधारशिला को अधिक मजबूत, व्यापक और विश्वस्तरीय बनाने की दिशा में उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम है।

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'

स्वामी- स्वतंत्र प्रभात मीडिया, मुद्रक एवं प्रकाशक प्रीती शुक्ल द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला बिजय लक्ष्मी नगर परगना सौराचाद तहसील व जनपद सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, होनेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में तमे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोटः** उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादों का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.NI NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0-9511151254, E-Mail: news@swatantraprabhat.com

संक्षिप्त खबरें

जनचौपाल मे नहीं पहुंचे अधिकारी, औपचारिकता बनकर रह गया, आयोजन

ग्रामीणों को मिला सिर्फ इंतजार और निराशा, लौटे मायूस

लालगंज (रायबरेली)। आदर्श ग्राम पंचायत ऐहार में शुक्रवार को लगा जनचौपाल का बोर्ड, कुर्सियां भी सजीं... लेकिन जिनके लिए सब इंतजाम था, वही अधिकारी नदारद रहे। नतीजा–जनचौपाल 'जन' से भरी रही, पर 'अफसर' गायब! सुबह से अपनी समस्याएं लेकर पहुंचे ग्रामीण घंटों इंतजार करते रहे। हर आहट पर नजरें दरवाजे की ओर उठती रहीं, लेकिन कोई जिम्मेदार अधिकारी नहीं पहुंचा। आखिरकार लोगों की उम्मीदें मायूसी में बदल गई। मौके पर सिर्फ ग्राम पंचायत सचिव, सफाई कर्मचारी और आंगनबाड़ी सहायक ही नजर आए। यानी जनचौपाल का मकसद वहीं दम तोड़ गया, जहां से शुरू होना था। ग्रामीणों ने प्रशासन पर सीधा निशाना साधते हुए कहा– 'जब सुनवाई ही नहीं होनी थी तो बुलाया क्यों?' लोगों का आरोप है कि जनचौपाल अब सिर्फ कागजों में दिखाने का खेल बनकर रह गया है। प्रधान विद्यावती यादव, प्रधान प्रतिनिधि राजेश फौजी, सदस्य सोनी निर्मल, रामविलास लोधी, भोला यादव, रजनू यादव, पुनीत सैनी, राहुल यादव, आदि मौजूद रहे, लेकिन बिना अधिकारियों के यह पूरा आयोजन बेमानी साबित हुआ।

केवाईसी और सर्वर संकट से जूझ रहे गैस उपभोक्ता

घंटों लाइन में लगकर भी लौटे मायूस

लालगंज (रायबरेली)। घरेलू गैस उपभोक्ताओं की परेशानी कम होने का नाम नहीं ले रही है। शुक्रवार को इंडेन और एचपी गैस एजेंसी के बाहर लंबी लाइनें लगी रहीं। सुबह से ही महिला, पुरुष और बुजुर्ग अपनी बारी का इंतजार करते नजर आए।अधिकतर लोग केवाईसी को लेकर परेशान दिखे। कई उपभोक्ताओं को कर्मचारियों ने सर्वर न होने की बात कहकर लौटा दिया। इससे लोगों में नाराजगी भी देखने को मिली। सातनपुर गांव की निर्मला ने बताया कि वह पिछले 15 दिनों से परेशान हैं। गैस बुक कराने के बाद ओटीपी नहीं आया।जानकारी करने पर पता चला कि केवाईसी नहीं है। वह तीन दिन से एजेंसी के चक्कर लगा रही हैं, लेकिन काम नहीं हो पा रहा। सुहाईबाग के रामनरेश सुबह 9 बजे से लाइन में लगे थे। 11:30 बजे तक उनका नंबर नहीं आया। उन्होंने बताया कि एक दिन पहले भी लाइन में लगे थे लेकिन बिना काम के वापस लौटना पड़ा।सूदन खेड़ा के एक बुजुर्ग ने बताया कि उन्होंने गैस सिलेंडर बुक किया था। मोबाइल पर डिलीवरी का मैसेज भी आ गया। इसके बावजूद सिलेंडर नहीं मिला। एजेंसी पहुंचने पर उन्हें बाद में देने की बात कही गई। लगातार हो रही इस समस्या से उपभोक्ता परेशान हैं। लोगों का कहना है कि व्यवस्था में सुधार की जरूरत है ताकि उन्हें बार बार एजेंसियों के चक्कर न लगाना पड़े।

आवारा सांड के हमले से बेकाबू बैलगाड़ी ने ली बुजुर्ग महिला की जान, परिजनों मे मचा कोहराम

आवारा सांड बना मौत का कारण, ग्रामीणों मे आक्रोश

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के पिलखा गांव में शुक्रवार को एक बेहद दर्दनाक हादसा हो गया। आवारा सांड के हमले से बेकाबू हुई बैलगाड़ी ने एक वृद्ध महिला की जान ले ली, जिससे पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई। गांव निवासी सुशीला (65) पत्नी दयाराम दोपहर में खेत से घर लौट रही थीं। वह पैदल आगे चल रही थीं, जबकि उनके पीछे उनका बेटा सोनू बैलगाड़ी लेकर आ रहा था। इसी दौरान गांव के पास अचानक एक आवारा सांड ने बैलगाड़ी पर हमला कर दिया। सांड को देख बैल बुरी तरह भड़क गए और तेज दौड़ने लगे, जिससे बैलगाड़ी अनियंत्रित हो गई। स्थिति बिगड़ते देख सोनू ने किसी तरह कूदकर अपनी जान बचाई और आगे चल रही मां को हटने के लिए आवाज लगाई। लेकिन जब तक सुशीला कुछ समझ पातीं, तब तक बेकाबू बैलगाड़ी उनके ऊपर से गुजर गई और मौके पर ही उनकी मौत हो गई। घटना के बाद गांव में दहशत का माहौल है। वहीं परिवार में कोहराम मच गया है। मृतका के तीनों बेटे–मनोज, सोनू और विजय का रो-रोकर बुरा हाल है। पति दयाराम, जो परदेश में एक कूलर फैक्ट्री में काम करते हैं, उन्हें भी घटना की सूचना दे दी गई है।

अव्यवस्था की आग में झुलसता बचपनः टिकरा सामद के विद्यालय में गैस के बजाय चूल्हे पर बन रहा मिड-डे मील वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। उन्नाव जनपद के औरास ब्लॉक स्थित ग्राम पंचायत टिकरा सामद के एक उच्च प्राथमिक विद्यालय से शिक्षा व्यवस्था की जमीनी हकीकत को उजागर करती एक चिंताजनक तस्वीर सामने आई है। जहां एक ओर सरकार डिजिटल शिक्षा और स्वच्छ भारत जैसे अभियानों का जोर-शोर से प्रचार कर रही है, वहीं दूसरी ओर इस विद्यालय में बच्चों का भविष्य धुएं और अव्यवस्था के बीच पक रहा है। मामला विद्यालय में बनने वाले मिड-डे मील (MDM) से जुड़ा है। जानकारी के अनुसार, यहां बच्चों के लिए भोजन गैस चूल्हे पर नहीं, बल्कि लकड़ियों और गोबर के उपलों से जलने वाले पारंपरिक चूल्हों पर तैयार किया जा रहा है। यह स्थिति न केवल सरकारी दावों पर सवाल खड़े करती है, बल्कि बच्चों के स्वास्थ्य और शिक्षा दोनों के लिए गंभीर खतरा बन चुकी है।

विद्यालय में कार्यरत रसोइयों–मोती, सलोनी और बताशा–ने अपनी पीड़ा साझा करते हुए बताया कि पहले खाना गैस सिलेंडर पर बनाया जाता था, जिससे काम आसान होता था और समय की भी बचत होती थी। लेकिन अब गैस सिलेंडर उपलब्ध नहीं है, जिसके चलते उन्हें मजबूरी में चूल्हे का सहारा लेना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि बड़ी संख्या में बच्चों के लिए भोजन बनाना चूल्हे पर बेहद कठिन होता है और इससे निकलने वाला धुआं आंखों और फेफड़ों पर बुरा असर डाल रहा है। रसोइयों का आरोप है कि मिड-डे मील के लिए गैस सिलेंडर का बजट सरकार द्वारा जारी किया जाता है और इसकी राशि सीधे ग्राम प्रधान के खाते में भेजी जाती है। इसके बावजूद विद्यालय तक सिलेंडर नहीं पहुंच रहा है, जिससे कई सवाल खड़े हो रहे हैं कि आखिर आवंटित धनराशि कहां जा रही है।

इस पूरी स्थिति का असर सीधे बच्चों पर पड़ रहा है। चूल्हे से उठने वाला जहरीला धुआं विद्यालय परिसर में फैल जाता है, जिससे छोटे-छोटे बच्चे भी प्रभावित हो रहे हैं। इससे उनके स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर पड़ने की आशंका बढ़ गई है। साथ ही, पढ़ाई का माहौल भी प्रभावित हो रहा है, क्योंकि धुएं और अव्यवस्था के बीच पढ़ाई करना बच्चों के लिए आसान नहीं है। सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या बच्चे विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करेंगे या फिर इस तरह की लापरवाही और अव्यवस्था का शिकार बनते रहेंगे? ग्राम प्रधान और संबंधित अधिकारियों की इस उदासीनता पर आखिर कौन कार्रवाई करेगा? अब देखना यह होगा कि प्रशासन इस गंभीर मामले का संज्ञान कब लेता है और विद्यालय में दोबारा गैस सिलेंडर की व्यवस्था कब बहाल होती है। जब तक जिम्मेदार लोग अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाते, तब तक ऐसे ही हालात में बच्चों का बचपन और भविष्य दोनों प्रभावित होते रहेंगे।

दारुल उलूम हबीबिया रिज्विया गोपीगंज का दीक्षांत समारोह कल

गोपीगंज। दारुल उलूम हबीबिया रिज्विया गोपीगंज का 38वा सालाना दस्तार ए फजीलत (हबीब ए दो आलम कांफ्रेस) पूरी शानो शौकत के साथ 05 अप्रैल रविवार को आयोजित किया गया है। यह जानकारी प्राचार्य मोहम्मद मुख्तार रिज्वी ने दीद्यबताया कि इसमे हजरत अल्लामा मौलाना हम्माद रजा मुरादाबाद, सैयद मोहम्मद शारीक, अलाऊद्दीन चतुर्वेदी एवं हजरत अल्लामा अब्दुस्समद जियाई भदोही और शायरो मे मो.अख्तर काशब गिरीडीह झारखंड, शमीर रजा, एहशान शाबरी शामिल होगेद्यमदरसे के 30 छात्र हाफिज मौलवी व कारी का खिताब हासिल करेंगे।

फ्री मेडिकल हेल्थ एजुकेशन कैंप का ग्राम खानपुर सादात में किया गया आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लहरपुर सीतापुर जनरल इंश्योरेंस कारपोरेशन ऑफ़ इंडिया श्री पीतांबरा शिक्षा समिति एवं के पी सिंह मेमोरियल हॉस्पिटल पारा सराय के संयुक्त तत्वाधान में एक फ्री मेडिकल हेल्थ एजुकेशन कैंप का आयोजन ग्राम सभा खानपुर सादात में किया गया जिसमें 168 रोगियों का परीक्षण कर उन्हें दवाइयां और स्वास्थ्य संबंधी जानकारी एवं परामर्श दिया गया कैंप में डॉक्टर एस ए मीर एमडी मेडिसिन जनरल फिजिशियन डा अनुज वर्मा डॉक्टर एहतेशाम खान जनरल फिजिशियन डॉ मधुलिका राय गाईनी डॉक्टर हर्षित जैन सर्जन डॉक्टर मुस्कान गाईनी महिला रोग विशेषज्ञ तथा फार्मासिस्ट एवं नर्सिंग स्टाफ के द्वारा रोगियों को चिकित्सा एवं परामर्श की सुविधा प्रदान की गई। कार्यक्रम में के पी सिंह मेमोरियल इंस्टीट्यूट आफ फार्मेसी तथा केपी सिंह हॉस्पिटल पारा सराय के चेयरमैन डॉक्टर एसपी सिंह के द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में 70 वर्ष आयु पूर्ण कर चुके लोगों का आयुष्मान कार्ड भी बनाया गया कार्यक्रम में मुख्य रूप से सलमान जैदी अंशुमान सिंह ऐश्वर्रय प्रताप सिंह समेत ग्राम सभा के सम्मानित नागरिक एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

कोतवाली में भावुक माहौल के बीच सात होमगार्ड जवानों के सेवानिवृत्त होने पर भव्य विदाई समारोह

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज/रायबरेली: महराजगंज कोतवाली परिसर में एक भावुक माहौल के बीच सात होमगार्ड जवानों के सेवानिवृत्त होने पर भव्य विदाई समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सेवानिवृत्त हुए जवानों को माला पहनाकर, मुंह मीठा कराकर तथा प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानपूर्वक विदाई दी गई। आपको बता दें कि, सेवानिवृत्त होने वालों में कमलेश कुमार शुक्ला, जगदेव मिश्रा, जंग बहादुर यादव, छेदी लाल यादव, सुरेन्द्र बहादुर सिंह, शिवमंगल चौरसिया एवं देव नारायण शामिल रहे। सभी ने वर्षों तक अपनी सेवाएं देकर विभाग की जिम्मेदारियों का निर्वहन किया।

इस अवसर पर कोतवाली प्रभारी जगदीश यादव ने अपने संबोधन में कहा, 'होमगार्ड जवानों ने विपरीत परिस्थितियों में भी निष्ठा, अनुशासन और समर्पण के साथ अपनी सेवाएं दी हैं। इनकी भूमिका कानून-व्यवस्था बनाए रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। आज इनकी विदाई केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि उनके योगदान के प्रति हमारा सम्मान है। हम सभी इनके उज्ज्वल, स्वस्थ और सुखद भविष्य की कामना करते हैं। कार्यक्रम के दौरान मौजूद अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों ने भी सेवानिवृत्त जवानों के साथ बिताए गए अनुभव साझा किए और उनके योगदान को सराहा। माहौल भावुक रहा और कई लोगों की आंखें नम हो गईं। इस मौके पर प्लाटून कमांडर इंद्रमणि सिंह सहित राजेश राय, एसीसी बुद्धिसेन शर्मा, रामप्रताप यादव, रामदास, शिवकरण यादव, संतोष द्विवेदी, अनुज कुमार सिंह, मनीराम, दिनेश कुमार सिंह, रामकुमार सिंह, लाल मोहम्मद, धर्मदास, माताफेर, ब्रजेश सिंह, रमापति बाजपेई, तेजकुमार, संतलाल, राजीव मिश्रा, आशीष द्विवेदी, रामयश मौर्य, रामप्रकाश सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

शिक्षा की नींव मजबूत करने का प्रयास, प्रदेश के परिषदीय स्कूलों में हर सप्ताह 'रीडिंग डे' से बढ़ेगी पढ़ने की आदत

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में शिक्षा की नींव मजबूत करने पर जोरदार प्रयास किया जा रहा है। अब परिषदीय विद्यालयों में बच्चों की पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए अब हर सप्ताह एक दिन 'रीडिंग डे' मनाया जाएगा। प्रदेश में कक्षा दो से आठ तक के छात्र-छात्राएं इस दिन लाइब्रेरी में बैठकर पठन-पाठन करेंगे। यह व्यवस्था शैक्षिक सत्र 2026-27 के लिए तैयार किए गए नए शैक्षिक कैलेंडर में लागू की गई है। प्रदेश के परिषदीय, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, कंपोजिट विद्यालयों के साथ-साथ कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में निर्धारित शैक्षिक कैलेंडर के अनुसार पढ़ाई कराई जाएगी। अप्रैल से ही इसकी शुरुआत करते हुए पूरे वर्ष के लिए महीनेवार पाठ्यक्रम तय किया गया है, ताकि समयबद्ध तरीके से पढ़ाई पूरी हो सके। इसकी हर माह प्रधानाध्यापक समीक्षा भी करेंगे। बढ़ते स्क्रीन टाइम को देखते हुए बच्चों को मोबाइल और टीवी से दूर रखने के लिए पहल की गई है। इसके तहत बच्चों को समाचार पत्र पढ़ने की आदत विकसित करने के निर्देश दिए गए हैं। प्रार्थना सभा में रोजाना मुख्य समाचार बच्चों से पढ़वाए जाएंगे। कैलेंडर के मुताबिक, अप्रैल में वार्षिक पाठ्यक्रम का करीब 20 प्रतिशत हिस्सा पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए शिक्षकों को उसी अनुसार पाठ योजना तैयार करने के निर्देश दिए गए हैं।

AIM CBSE कॉलेज का वार्षिक सम्मान समारोह बना भावनाओं का उत्सव

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर बारी (सिधौली), 2 अप्रैल 2026 AIM CBSE कॉलेज, बारी (सिधौली) का वार्षिक सम्मान समारोह इस वर्ष केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं रहा, बल्कि यह भावनाओं, गर्व और प्रेरणा का अद्भुत संगम बन गया। पूरे परिसर में उत्साह, उल्लास और आत्मीयता का ऐसा वातावरण था, जिसने हर उपस्थित व्यक्ति के हृदय को छू लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार के शहरी विकास मंत्री माननीय श्री राकेश राठौर की गरिमामयी उपस्थिति रही। विशिष्ट अतिथि के रूप में उप श्रम आयुक्त डॉ. महेश पांडेय तथा गेस्ट ऑफ ऑनर कर्नल राजेश त्रिवेदी ने समारोह की शोभा बढ़ाई। इसके साथ ही क्षेत्र के सम्मानित प्रधान, सभासद, अधिवक्ता, पत्रकार एवं अभिभावकों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को सामाजिक एकता का स्वरूप प्रदान किया।

कॉलेज के सचिव एडवोकेट एम. एस. फ़रीदी द्वारा अतिथियों का पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया गया, जो केवल औपचारिकता न होकर सम्मान और संस्कारों की सजीव अभिव्यक्ति प्रतीत हुआ। मुख्य अतिथि श्री राकेश राठौर ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों को मेहनत, अनुशासन और लक्ष्य के प्रति समर्पण का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि ढ्रूरू कॉलेज केवल शिक्षा प्रदान नहीं कर रहा, बल्कि छात्रों को राष्ट्रनिर्माता बनने की दिशा में अग्रसर कर रहा है। उनके प्रेरणादायक शब्दों ने विद्यार्थियों के भीतर नई ऊर्जा और आत्मविश्वास का संचार किया। जब मेधावी छात्र-छात्राओं को मंच पर बुलाकर सम्मानित किया गया, तो वह दृश्य सभी के लिए गर्व का क्षण बन गया। तालियों की गूंज के बीच जब बच्चों ने मेडल, ट्रॉफी और प्रमाण पत्र ग्रहण किए, तो उनकी आंखों में चमकते सपने स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। विशिष्ट अतिथि डॉ. महेश पांडेय ने शिक्षा को जीवन की सबसे बड़ी शक्ति बताते हुए कहा कि यही वह आधार है, जो व्यक्ति को सही दिशा देता है और समाज को सशक्त बनाता है। वहीं कर्नल राजेश त्रिवेदी ने अनुशासन, देशभक्ति और नेतृत्व पर बल देते हुए विद्यार्थियों को राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका समझने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने वातावरण को रंगों और भावनाओं से भर दिया। नृत्य, गीत और नाट्य प्रस्तुतियों ने न केवल मनोरंजन किया, बल्कि प्रत्येक प्रस्तुति में विद्यार्थियों की मेहनत और

समर्पण स्पष्ट झलकता रहा। समारोह का सबसे भावुक और अविस्मरणीय क्षण वह था, जब अपने बच्चों को मंच पर सम्मानित होते देख कई अभिभावकों की आंखें नम हो गईं। उन आंसुओं में वर्षों की मेहनत, त्याग और सपनों की चमक समाई हुई थी। यह दृश्य इस बात का प्रतीक था कि यह सम्मान केवल बच्चों का नहीं, बल्कि उनके परिवारों के संघर्ष और विश्वास की भी जीत है। पूरे कार्यक्रम ने यह सिद्ध कर दिया कि ढ्रूरू छ्क्क्स्थ कॉलेज केवल एक शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि सपनों को साकार करने का एक सशक्त मंच है। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह का समापन हुआ, लेकिन यह आयोजन हर उपस्थित व्यक्ति के मन में एक प्रेरणादायक स्मृति बनकर बस गया।

बिसवां बार एसोसिएशन चुनाव का आगाज, नामांकन के साथ गूंजा तहसील परिसर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां (सीतापुर)। बिसवां बार एसोसिएशन के वार्षिक चुनाव का शुक्रवार को विधिवत शुभारंभ हो गया। चुनावी प्रक्रिया के तहत अध्यक्ष पद के उम्मीदवार राजकिशोर यादव एडवोकेट तथा सचिव पद के उम्मीदवार नीरज कुमार श्रीवास्तव ने बैंड-बाजे के साथ उत्साहपूर्ण माहौल में अपना-अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। नामांकन से पूर्व दोनों प्रत्याशियों ने तहसील परिसर स्थित शहीद स्मारक पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परिसर में स्थित भोलेनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके उपरांत निर्वाचन अधिकारी ब्रजेश नारायण गुप्ता, प्रमोद कुमार श्रीवास्तव एवं राजेश वर्मा के समक्ष विधिवत नामांकन प्रक्रिया पूरी की गई। अध्यक्ष पद हेतु राजकिशोर यादव, पुत्ती लाल वर्मा, सचिव पद के लिए नीरज वर्मा, इन्द्रपाल वर्मा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद के लिए संतोष कठेरिया, उपाध्यक्ष पद के लिए इंतखाब आलम, संयुक्त सचिव प्रशासन विपिन कुमार यादव ने नामांकन दाखिल किया।

इस अवसर पर तहसील परिसर में अधिवक्ताओं की अच्छी खासी भीड़ देखने को मिली। कार्यक्रम में वरिष्ठ अधिवक्ता आर.एन. सिंह, अध्यक्ष बिसवां बार एशोसिएशन दिनेश श्रीवास्तव, अशोक वर्मा, सूर्य प्रसाद यादव , रामकिशोर वर्मा, शिशुलाल यादव, के0के0वैश्य बिसवां बार एशोषियेशन के अधिवक्ता मौजूद रहे इसके अलावा बिसवां लॉयर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष आनंद मेहरोत्रा एवं सचिव नागेंद्र मौर्य भी उपस्थित रहे। इसके अलावा निर्भय मौर्य, राजेंद्र प्रताप सिंह, राजेश सिंह, वीरेंद्र शुक्ला, राजेंद्र वर्मा, रजनीश मिश्रा, नईम

अंसारी, सर्वेश मोहन श्रीवास्तव, कुंवर आशीष सिंह, रेनू राजपूत सहित बड़ी संख्या में अधिवक्ताओं की मौजूदगी रही। चुनावी माहौल के आगाज के साथ ही तहसील परिसर में उत्साह और सरगर्मी का माहौल बन गया है। आगामी दिनों में चुनावी गतिविधियों के और तेज होने की संभावना है।

भागवत सुनने मात्र से दूर हो जाते हैं कष्ट- कथा व्यास पंडित चंद्रेश कृष्ण शास्त्री

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज/रायबरेली। अखरी पोस्ट कसेरुवा में सप्तवेदी, गणेश आंबिका, रूद्र हनुमत देव, सहित मोक्षदायिनी श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन मुख्य यजमान शिव सिंह, सपत्नीक किरन सिंह, के यहां आनंद मिश्रा के द्वारा संकल्पित सातवीं श्रीमद् भागवत कथा का हो रहा भव्य आयोजन। आपको बता दें कि, ग्राम सभा अखरी पोस्ट कसेरुवा जिला फतेहपुर में श्रीमद् भागवत कथा के तीसरे दिन शुक्रवार को श्री अयोध्या धाम से पधारे कथा व्यास पंडित चंद्रेश कृष्ण शास्त्री ने विविध प्रसंगों पर अद्भुत व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए लोगों से सन्मार्ग पर चलने की बात कही।

कथा व्यास ने बताया कि, भागवत कथा से मनुष्यों को ज्ञान व वैराग्य की प्राप्ति होती है। श्रीमद् भागवत कथा जीवन में उद्देश्य व दिशा को दर्शाती है इसीलिए कहते हैं की श्रीमद् भागवत कथा सुनने मात्र से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है उसे ईश्वर के श्री चरणों में स्थान मिलता है। कथा व्यास ने यह भी बताया कि, मनुष्य का क्या कर्तव्य है इसका बोध भागवत सुनकर ही होता है विडंबना यह है कि मृत्यु निश्चित होने के बाद भी हम उसे स्वीकार नहीं करते हैं निष्काम भाव से प्रभु का स्मरण करने

वाले लोग अपना जन्म और मरण दोनों सुधार लेते हैं। प्रभु जब अवतार लेते हैं तो माया के साथ आते हैं साधारण मनुष्य माया को शाश्वत मान लेता है और अपने शरीर को प्रधान मान लेता है जबकि शरीर नश्वर है भागवत कथा यह सिखाती है कि, कर्म ऐसे करो जो निष्काम हो वही सच्ची भक्ति है। कथा व्यास ने सती प्रसंग, ध्रुव चरित्र, श्रृंगीऋषि के प्रसंग पर अद्भुत व्याख्यान प्रस्तुत किया। कथा व्यास पंडित चंद्रेश कृष्ण शास्त्री द्वारा विभिन्न प्रसंगों को सुनकर पांडाल में उपस्थित हजारो श्रद्धालु भाव विभोर हो गए। इस मौके पर यज्ञ शाला के मुख्य आचार्य पंडित सीताराम शास्त्री, यज्ञाचार्य सुबोध शास्त्री, उपयज्ञाचार्य योगेंद्र नाथ त्रिपाठी, व्यवस्थापक शीतला बख्श सिंह, श्रवण मिश्रा, शेर सिंह, विजय बहादुर सिंह, राजा सिंह चौहान, अक्षत सिंह, शुभम सिंह, मोनू सिंह, विक्रम सिंह, हर्षित सिंह, निखिल सिंह, रंग बहादुर सिंह, धीरेंद्र सिंह एवं समस्त मित्रगण सहित आदि भक्त उपस्थित रहे।

'साधना सप्ताह' में एआइ कोर्स अनिवार्य, यूपी में शिक्षा विभाग के सभी अधिकारियों-कर्मचारियों के लिए नया फरमान जारी

लखनऊ। मिशन कर्मयोगी के तहत आठ अप्रैल तक आयोजित 'साधना सप्ताह' में बेसिक और माध्यमिक शिक्षा विभाग के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए एआइ (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) से जुड़े कोर्स करना अनिवार्य कर दिया गया है। तीन एआइ कोर्स पूरा करने पर कर्मचारियों को 'एआइ दक्ष' का खिताब और प्रमाण-पत्र दिया जाएगा। महानिदेशक स्कूल शिक्षा मोनिका रानी की ओर से जारी निर्देश में कहा गया है कि इस सप्ताह के दौरान कम से कम चार घंटे का आनलाइन प्रशिक्षण पूरा करना होगा। इसके लिए आइगाट कर्मयोगी पोर्टल पर एआइ से जुड़े छह कोर्स उपलब्ध कराए गए हैं, जिनमें से किसी भी तीन को पूरा करना जरूरी है। यदि कोई अधिकारी आइगाट मार्केट प्लेस से संबंधित एक कोर्स पूरा करता है, तो उसे 'कर्मयोगी उत्कृष्ट' बैच का खिताब भी मिलेगा। फ्रंटलाइन वर्कर्स के लिए संचार कौशल, सेवा भाव और राजधर्म जैसे विषयों पर विशेष कोर्स भी शामिल किए गए हैं। विभाग ने सभी कार्यालयाध्यक्षों को निर्देश दिया है कि वे व्यक्तिगत रुचि लेकर अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से तय समय में कोर्स पूरा कराएं, ताकि डिजिटल और एआइ आधारित कार्य संस्कृति को बढ़ावा मिल सके।

दलित मतदाताओं में पैठ बढ़ाने के लिए अखिलेश का नया दांव, 2027 के चुनाव को लेकर एक्टिव हुई सपा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। वर्ष 2027 के विधान सभा की जमीन मजबूत करने में जुटी सपा दलित मतदाताओं में पैठ बढ़ाने के लिए बड़ा दांव चलने जा रही है। इस बार पार्टी द्वारा 14 अप्रैल को डा. बीआर आंबेडकर की जयंती का आयोजन गांव और सेक्टर स्तर पर किया जाएगा। इससे पहले राज्य मुख्यालय के साथ केवल जिला कार्यालयों पर ही जयंती मनाई जाती रही है। इस बार कोशिश है कि अधिक से अधिक दलित आबादी को जोड़ा जाए और संविधान बचाने के लिए पार्टी के समर्थन को प्रेरित किया जाए। शुक्रवार को सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पत्रकार वार्ता में कहा कि भाजपा सरकार में संविधान पर जो संकट है, उसकी चर्चा इन आयोजनों में की जाएगी। पार्टी मुख्यालय पर युवा संगठनों के पदाधिकारियों संग बैठक के बाद पत्रकार वार्ता में सपा प्रमुख ने कहा कि यह अमृत काल नहीं, संकट काल चल रहा है। हम समाजवादी लोग बाबा साहब, डा. राममनोहर लोहिया और नेताजी मुलायम सिंह यादव के रास्ते पर चलते हुए समाज को नई दिशा देना चाहते हैं। भाजपा लोकतंत्र को नहीं, एकतंत्र को मानती है। संविधान को कमजोर करना चाहती है। हम सब पीडीए के पीड़ित, दुखी, अपमानित लोगों को साथ लेकर वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव की तरह वर्ष 2027 के विधान सभा चुनाव में भाजपा को हराकर प्रदेश में पुनः समाजवादी सरकार बनाएंगे।

प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के क्षेत्र में दिन दहाड़े हत्याएंः अखिलेश

सपा प्रमुख ने कहा कि प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के क्षेत्र में दिन दहाड़े हत्याएं होती हैं। भाजपा के सांसद ने कहा न्याय नहीं मिलेगा तो पोल खोल दूंगा। जापान देखकर आने के बाद भी लोगों की आंखें नहीं खुल रही हैं। स्वास्थ्य विभाग वेंटीलेटर पर है। लापरवाही की हद है कि जानवर को लगने वाली सिरिंज आदमियों को लगाने के लिए खरीद ली गई। मुद्दों से ध्यान भटकाने को सरकार बहाना ढूंढती है। अब तो खाद, गंगा सफाई आदि समस्याओं के लिए ईरान-इजरायल युद्ध को जिम्मेदार ठहरा देगी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर तंज

उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर तंज करते हुए कहा कि लखनऊ में बने ग्रीन कारीडोर की बर्बादी के लिए डिजाइन बनाने वाला जिम्मेदार है। लगता है इसकी डिजाइन मुख्यमंत्री ने की है। भाजपा सबकुछ बेच रही है तो जेपीएनआइसी को भी बेच दे, अब हम उसे नहीं खरीदेंगे। इससे पहले बैठक में पदाधिकारियों को निर्देश दिए कि सपा सरकार बनाने के लिए युवा पूरी मुस्तैदी से बूथ स्तर तक जुटें। अपनी भाषा, व्यवहार और शिष्ट आचरण का परिचय दें। हमारी भाषा एक दूसरे के प्रति सम्मानजनक व्यवहार होना चाहिए।

मलिहाबाद में ईमानदारी की मिसालः उप निरीक्षक ने लौटाया 10,500 रुपये व महत्वपूर्ण दस्तावेजों से भरा पर्स

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ के मलिहाबाद क्षेत्र में पुलिस की ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा का एक सराहनीय उदाहरण सामने आया है। यहां तैनात उप निरीक्षक दिनेश कुमार सिंह ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि पुलिस सिर्फ कानून-व्यवस्था बनाए रखने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि समाज में विश्वास और मानवता की मिसाल भी पेश करती है। जानकारी के अनुसार, मलिहाबाद थाने में तैनात उप निरीक्षक दिनेश कुमार सिंह को ड्यूटी के दौरान एक लावारिस पर्स मिला। पर्स की तलाशी लेने पर उसमें 10,500 रुपये नकद के साथ कई महत्वपूर्ण दस्तावेज पाए गए। ऐसे मामलों में अक्सर सामान के मालिक तक पहुंचना चुनौतीपूर्ण होता है, लेकिन उप निरीक्षक ने जिम्मेदारी और ईमानदारी का परिचय देते हुए पर्स के असली मालिक को खोजने का निर्णय लिया।

पर्स में मिले दस्तावेजों की बारीकी से जांच की गई। इसी दौरान एक मोबाइल नंबर मिला, जो इस मामले में अहम कड़ी साबित हुआ। उप निरीक्षक दिनेश कुमार सिंह ने तुरंत उस नंबर पर संपर्क किया और पर्स के मालिक के बारे में जानकारी जुटाई। जांच के बाद यह स्पष्ट हुआ कि यह पर्स फिरोजपुर निवासी सरोज का है, जो किसी कारणवश रास्ते में गिर गया था। सूचना मिलने के बाद सरोज तुरंत मलिहाबाद थाने पहुंचे। वहां पुलिस ने आवश्यक सत्यापन प्रक्रिया पूरी की, ताकि पर्स सही व्यक्ति को ही सौंपा जा सके। पूरी जांच-पड़ताल के बाद उप निरीक्षक दिनेश कुमार सिंह ने पर्स उसके असली मालिक सरोज को सौंप दिया। पर्स में रखे सभी रुपये और दस्तावेज सुरक्षित पाकर सरोज की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

अपना खोया हुआ पर्स वापस मिलने पर सरोज ने मलिहाबाद पुलिस और विशेष रूप से उप निरीक्षक दिनेश कुमार सिंह का दिल से आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि आज के समय में इस तरह की ईमानदारी बहुत कम देखने को मिलती है और पुलिस का यह कदम समाज में विश्वास को मजबूत करता

है। इस घटना के बाद क्षेत्र में उप निरीक्षक दिनेश कुमार सिंह की जमकर सराहना हो रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि ऐसे कार्य पुलिस की सकारात्मक छवि को मजबूत करते हैं और आम जनता का भरोसा बढ़ाते हैं। यह घटना न केवल पुलिस की ईमानदारी को दर्शाती है, बल्कि समाज के लिए भी एक प्रेरणा है कि सच्चाई और जिम्मेदारी का रास्ता हमेशा सबसे बेहतर होता है। मलिहाबाद पुलिस की इस पहल ने यह साबित कर दिया है कि जब कर्तव्य के साथ ईमानदारी जुड़ जाती है, तो हर काम समाज के लिए एक मिसाल बन जाता है।

संक्षिप्त खबरें

दिल्ली मेट्रो ने टाइम टेबल में किया बदलाव, रविवार को सुबह 3 बजे से शुरू होंगी सेवाएं

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो ने रविवार को यात्रियों के लिए विशेष व्यवस्था की है। 5 अप्रैल (रविवार) को जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में होने वाले इस मैराथन में हिस्सा लेनेवाले लोगों को सुविधा प्रदान करने के लिए येलो, ब्लू और वायलेट लाइन पर मेट्रो सेवाएं सुबह 3 बजे से शुरू होंगी। ये ट्रेनें 6 बजे तक हर 30 मिनट के अंतराल पर चलेंगी। उसके बाद अपने समय-सारणी के अनुसार ही सेवाएं जारी रहेंगी। येलो लाइन पर समयपुर बादली से मिलेनियम सिटी सेंटर गुरुग्राम तक, ब्लू लाइन पर द्वारका सेक्टर-21/द्वारका से नोएडा इलेक्ट्रॉनिक सिटी/वैशाली तक और वायलेट लाइन पर कश्मीरी गेट से राजा नाहर सिंह तक सुबह 3 बजे से विशेष सेवाएं उपलब्ध होंगी। अन्य सभी मेट्रो लाइनों पर सेवाएं अपने नियमित रविवार के टाइमटेबल के अनुसार ही शुरू होंगी।

जल्दी स्टेडियम पहुंचने में मिलेगी मदद

यह व्यवस्था मैराथन में भाग लेने वाले खिलाड़ियों और दर्शकों को सुबह जल्दी स्टेडियम पहुंचने में मदद करेगी। दिल्ली मेट्रो ने आधिकारिक रूप से इसकी जानकारी सोशल मीडिया पर साझा की है।

सिग्नेचर ब्रिज यू-टर्न से दिल्ली वालों को मिली बड़ी राहत, अब 5 किलोमीटर लंबा चक्कर नहीं काटना पड़ेगा

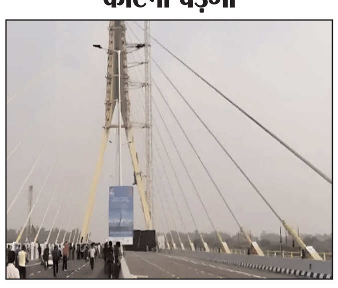

पूर्वी दिल्ली। सिग्नेचर ब्रिज के पास यू-टर्न बनने से वाहन चालकों ने राहत ली है। दिल्ली सहारनपुर देहरादून हाईवे के एलिवेटेड रोड व खजूरी फ्लाईओवर पर चलाने वाले चालकों को भजनपुरा, करावल नगर, सोनिया विहार व उस्मानपुर जाने के लिए सिग्नेचर ब्रिज को पार करते हुए पांच किलोमीटर का अतिरिक्त चक्कर लगाना पड़ता था। यू-टर्न लेने के लिए तीमारपुर व मजनूं का टीला जाना पड़ रहा था। नया यू-टर्न बनने से वाहन चालकों का समय और ईंधन दोनों बच रहे हैं। एनएचएआई ने उस्मानपुर पुश्ता रोड पर दिल्ली सहारनपुर देहरादूर हाइवे बनाया है। दिल्ली से करावल नगर तक एलिवेटेड रोड बनाया हुआ है।

खजूरी चौक तक बनाया गया लूप

गीता कॉलोनी से पुलिस कैंप तक एलिवेटेड रोड बनाया है। इस एलिवेटेड रोड से नीचे उतरने के लिए एनएचएआई ने खजूरी चौक पर लूप बनाया है, जो सिग्नेचर ब्रिज पर उतरता था। वहीं पीडब्ल्यूडी का खजूरी फ्लाईओवर पर सीधे सिग्नेचर ब्रिज पर उतरता था। दोनों ही रास्तों से अगर किसी को उस्मानपुर, भजनपुरा, श्रीराम कालोनी, यमुना विहार, चांदबाग जाना है तो वाहन चालकों को मजनूं का टीला और तीमारपुर से यू-टर्न लेकर आना पड़ता था। एलिवेटेड रोड गत चार माह पहले ही शुरू हुआ है, जबकि खजूरी फ्लाईओवर पिछले कई वर्षों से बना हुआ है। वाहन चालक इससे बहुत परेशान थे। पिछले साल केंद्रीय राज्यमंत्री हर्ष मल्होत्रा ने उत्तर पूर्वी जिला विकास समिति चेयरमैन अजय महावर के साथ खजूरी चौक का निरीक्षण किया था। उस दौरान चेयरमैन ने मंत्री से कहा कि था कि सिग्नेचर ब्रिज के पास यू-टर्न बनना चाहिए। अब जाकर यह यह यू-टर्न बना है। अजय महावर ने कहा कि बिना वजह वाहन चालकों को तीमारपुर व मजनूं का टीला जाना पड़ता था। वाहनों का दबाव ज्यादा होने से वहां जाम भी रहता था। यू-टर्न के लिए पांच किलोमीटर अतिरिक्त नहीं घूमना पड़ेगा।

असम में डबल इंजन सरकार को खींचने के लिए रथी-महारथियों के उमड़ी भीड़

● भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन, गृह मंत्री अमित शाह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री

● योगी आदित्यनाथ ने किया चुनाव प्रचार सभा।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

असम धेमाजी। 9अप्रैल 2026 को असम विधान सभा के चुनाव के दिन निर्धारित होने के बाद असम में सत्ताधारी पार्टी भाजपा एवं विपक्ष दोनों दलों ने चुनाव प्रचार में तेज करते हुए दिखाई दे रही हैं। आज तेजपुर जिले कि बरसोला चुनावी क्षेत्रो के घूराबंधा में भाजपा दल के उम्मीदवार रितु वरण शर्मा और बरपेटा चुनावी क्षेत्रो के एन डी ए गठबंधन समर्थित उम्मीदवार दीपक कुमार दास के लिए चुनाव प्रचार सभा में भाग लेकर उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कांग्रेस और ए आई यू डी एफ को कड़ी आलोचना करते हुए कहा कांग्रेस के समय में असम में घुसपैठियों का राज था दोनों दलों ने बांग्लादेशी घुसपैठियों के लिए कार्य करता था। असम में भाजपा सरकार जब से सत्ता में आया है असम में विकाश और शांति सारों तरफ़ खुशहाली दिखाई दे रही है, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और असम के मुख्यमंत्री हेमंत विश्व शर्मा के नेतृत्व में 2019 में डॉ भूपेन हजारिका को भारत रत्न, अटल बिहारी वाजपेई जी ने 1999 में गोपीनाथ बरदोलोई को भी भारत रत्न दिया था। असम के वैष्णव परंपरा श्रीमंत शंकर देव और माधव देव के परम्परा को आगे बढ़ाया।

दूसरी ओर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने दरंग जिले में चुनावी प्रचार सभा में भाग लेकर जिले के दो चुनावी क्षेत्रो के भाजपा उम्मीदवारों नीलाम देवी, सहित भाजपा उम्मीदवारों के लिए प्रचार सभा में भाग लिया। वही केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने चुनावी प्रचार में भाग लेकर असम के विकास के बारे में जिक्र करते हुए कहा कि असम के मुख्यमंत्री डॉ हीमंता बिस्वा शर्मा और मोदी जी के नेतृत्व में असम अब विकास के मार्ग में है असम सरकार बेरोज़गारी को 1 लाख सरकारी नौकरियों देनेकी बात कर 165000 हज़ार नौकरियों दिया है। अगले बार सरकार आने से 2 लाख बेरोजगारों को सरकारी नौकरियों देनी की असम सरकार के घोषणापत्र का जिक्र करते हुए पलाशबारी, कोलियाबोर ओर गौवालपाड़ा में बड़े पैमाने में आयोजित भाजपा उम्मीदवारों की तरफ के चुनावी प्रचार सभा में भाग लेकर कमल के चिन्ह पर वोट डालने के लिए लोगों को आह्वान किया।

श्रीभूमि जिले के पाथारकांदी दलग्राम घटना की तीव्र निंदा, दोषियों को सज़ा देने की मांग पर विभिन्न गाँवों में विरोध सभाएं

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि- श्रीभूमि जिले के पाथारकांदी विधानसभा क्षेत्र के काजीरबाजार-पलडहर जीपी के दलग्राम में हुई घटना को लेकर क्षेत्र में तीव्र तनाव व्याप्त है। स्थानीय अल्पसंख्यक समुदाय ने इस घटना की कड़ी निंदा करते हुए दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग उठाई है। आज 3 अप्रैल (शुक्रवार) जुम्मा नमाज के बाद लालछड़ा जामा मस्जिद, भैरवनगर जामा मस्जिद, गुलालकांदी जामा मस्जिद, गाजीटिला जामा मस्जिद और मूलियाला जामा मस्जिद सहित विभिन्न स्थानों पर विरोध सभाओं का आयोजन किया गया। इन सभाओं में उपस्थित लोगों ने दलग्राम की घटना को लोकतांत्रिक माहौल के खिलाफ और अत्यंत निंदनीय बताया।

वक्ताओं ने आरोप लगाया कि 31 मार्च को कृष्णेंदु पाल के काफिले पर हुआ हमला एक दुखद और निंदनीय घटना है। उन्होंने मांग की कि इस घटना में शामिल लोगों की जल्द पहचान कर उन्हें कड़ी सज़ा दी जाए। स्थानीय निवासियों ने इस घटना के लिए कृष्णेंदु पाल के प्रति दुख व्यक्त करते हुए क्षमा याचना की। उन्होंने यह भी कहा कि अल्पसंख्यक समाज कृष्णेंदु पाल के साथ है और भविष्य में भी उनका समर्थन जारी रहेगा। उल्लेखनीय है कि गत 31 मार्च को जिले के काजीरबाजार-पलडहर जीपी के दलग्राम में एक चुनावी सभा के बाद लौटते समय दलग्राम रेलवे गेट के पास कांग्रेस के चुनाव कार्यालय के सामने यह हमला हुआ, ऐसा आरोप लगाया गया है। इस घटना में भाजपा युवा मोर्चा के अध्यक्ष शंकर देवनाथ घायल हुए हैं।

कड़कड़डूमा कोर्ट ने दिल्ली दंगा मामले में नौ आरोपियों को किया बरी, गवाहों के बयान विरोधाभासी पाए गए

दिल्ली। कड़कड़डूमा कोर्ट ने 2020 के उत्तर-पूर्वी दिल्ली दंगों से जुड़े एक मामले में नौ आरोपितों को बरी कर दिया है। अदालत ने कहा कि अभियोजन पक्ष गवाहों के अस्पष्ट, विरोधाभासी और अविश्वसनीय बयानों के कारण अपना मामला साबित करने में विफल रहा। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश प्रवीन सिंह ने कहा कि अभियोजन का मामला तीन प्रमुख गवाहों के बयानों पर आधारित था, जिनकी गवाही भरोसेमंद नहीं पाई गई। अदालत के अनुसार गवाहों के बयान सामान्य थे और घटनास्थल को लेकर स्पष्टता का अभाव था। घटना की तारीख को लेकर भी गंभीर विरोधाभास मामले में घटना की तारीख को लेकर भी गंभीर विरोधाभास सामने आया। जांच अधिकारी ने घटना 24 फरवरी 2020 बताई, जबकि रिकार्ड में 25 फरवरी का जिक्र मिला। पीड़ित के अनुसार 24 फरवरी की शाम तक उसकी दुकान सुरक्षित थी, जिससे उस दिन आगजनी होने पर संदेह पैदा हुआ। अदालत ने यह भी कहा कि पीड़ित ने तारीख में गलती की जानकारी पुलिस को दी थी, लेकिन इसे नजरअंदाज कर दिया गया।

युवराज सिंह ने संन्यास के बाद कमेंट्री क्यों नहीं की भारतीय क्रिकेटर ने तीखा प्रहार करके किया खुलासा

● युवराज सिंह ने कमेंट्री नहीं करने का कारण बताया

युवराज सिंह ने 2019 में क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास लिया

युवराज सिंह ने कई बिजनेस में निवेश किया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। भारतीय टीम के पूर्व ऑलराउंडर युवराज सिंह ने संन्यास के बाद कमेंट्री नहीं करने का प्रमुख कारण बताया है। युवी ने कहा कि वो उन लोगों के साथ काम नहीं करना चाहते, जिन्होंने उनके खिलाफ ही निजी टिप्पणी की थी। युवराज सिंह ने किसी कमेंटेटर का नाम नहीं लिया, लेकिन कहा कि कुछ बातें उनके दिल में अभी भी चुभती हैं क्योंकि यह उनकी क्रिकेट प्रतिभा से ज्यादा निजी जिंदगी संबंधित थीं। याद दिला दें कि युवराज सिंह ने 2019 में क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्?यास लिया था।

युवी ने क्या किया?

युवराज सिंह संन्यास के बाद बिजनेस जगत में उतरे। उन्होंने रेस्टोरेंट और गोल्फ लीग में निवेश किया। इसके अलावा उन्होंने मेंटर की भूमिका निभाते हुए कई खिलाड़ियों को निजी कोचिंग दी। मगर वो कमेंट्री और ब्रॉडकास्टिंग से दूर रहे।

युवराज सिंह ने क्या कहा

पूर्व ऑलराउंडर ने स्पोर्ट्स तक से बातचीत में कहा, 'अब मैं रिटायर्ड हो चुका हूं तो यह कह सकता हूं। जो लोग मेरे बारें में बोलते थे, क्रिकेट के बारे में नहीं, लेकिन मुझ पर निजी टिप्पणी करते थे। मेरे ख्याल से अगर आप किसी के खेल के बारे में बात करें तो समझ आता है, यह खेल है। जब आप निजी हो जाते हैं, तो वो कमेंट्स जिंदगीभर आपके साथ रहते हैं। मैं बैठकर उन लोगों के साथ कमेंट्री नहीं कर सकता, जिन्होंने मेरे बारे में निजी टिप्पणी की। यही वजह है कि मैं कमेंट्री नहीं करना चाहता। खेल के बारे में बात करने के लिए कमेंट्री एक अच्?छी जगह है। मगर उस एक कारण से मैं कमेंट्री नहीं करना चाहता।'

संजू का बनाया करियर

युवराज सिंह ने अपने राज्य पंजाब के कुछ खिलाड़ियों का करियर बनाने में मदद की। हाल ही में उन्होंने संजू सैमसन की मदद की, जिन्होंने टी20 वर्ल्ड कप 2026 में धमाकेदार प्रदर्शन किया। अब आईपीएल से पहले युवी ने ऋषभ पंत की मेंटरिंग की।

संजू को दिया ऑफर

युवराज सिंह ने बताया, 'संजू सैमसन 8-10 पारियों में फ्लॉप रहे और खराब दौर से गुजर रहे थे। तब आप कुछ कहना चाहते हैं कि मुझे कुछ बदलाव करने की जरूरत है। संजू उस चरण में पहुंच गए थे, जहां उन्?हें महसूस होने लगा कि प्लेइंग 11 में जगह नहीं बनती। वो दक्षिण अफ्रीका में दो शतक जमा चुके थे। 2024 में जब भारत ने बारबाडोस में टी20 वर्ल्?ड कप जीता, तब मेरी संजू से बात हुई। उस वर्ल्ड कप में संजू खेल नहीं रहे थे। मैंने दो-तीन आईपीएल सीजन में उनकी बल्लेबाजी देखी थी। मैंने उनसे कहा कि जब भी समय रहे तो हम बात करेंगे।' 44 साल के युवराज ने कहा, 'मैंने संजू से कहा कि तुम्हें अपना फुटवर्क सुधारने की जरूरत है। अगर तुम सुधार नहीं करोगे तो लगातार मुश्किलों से घिरे रहोगे। रन बनाना मुश्किल नहीं, लेकिन इसके लिए फुटवर्क का अच्छा होना जरूरी है। मैंने उन्हें कुछ आईडिया बताएं कि कैसे वो सुधार कर सकते हैं।'

आईपीएल 2026: छोटी उम्र में ही दिखने लगी थी समीर रिजवी की क्रिकेट प्रतिभा, यूं बने 'रैना 2.0'

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मेरठ। समीर रिजवी आईपीएल 2026। दिल्ली कैपिटल्स को पिछले आईपीएल सीजन में अंतिम जीत और वर्तमान सीजन में पहले जीत से आगाज कराने वाले क्रिकेट समीर रिजवी में क्रिकेट प्रतिभा छोटी उम्र में ही प्रकट होने लगी थी। समीर जो अपने क्रिकेटर मामा तनकीब अख्तर के साथ क्रिकेट मैदान में समय बिताते थे, कब गेंद को लपकने लगे, इसका किसी को अंदाजा नहीं था।

समीर रिजवी की संघर्ष की कहानी

वर्ष 2011 में यूपी और सौराष्ट्र के बीच एक रणजी मैच के दौरान बाउंड्री के बाहर फील्डिंग करते समय यूपी के तत्कालीन कप्तान सुरेश रैना की नजर समीर पर पड़ी और उन्होंने उनकी प्रशंसा की। इस प्रशंसा ने तनकीब को समीर का कोच बनने के लिए प्रेरित किया। मेरठ के अमरौली और बड़ा गांव में रहने वाले तनकीब खुद एक क्रिकेटर थे। कक्षा 12वीं के बाद, उन्होंने क्रिकेट में करियर बनाने के लिए शहर में अपनी बड़ी बहन के पास रहने का निर्णय लिया।

तनकीब छावनी स्थित गांधी बाग क्रिकेट मैदान में खेलने जाते थे और 2007-08 में उन्होंने गांधी बाग क्रिकेट अकादमी में कोचिंग शुरू की। समीर भी छोटी उम्र से उनके साथ मैदान पहुंच जाते थे और उनका अधिकांश समय क्रिकेट मैदान पर ही बीतता था। धीरे-धीरे समीर की फील्डिंग में निपुणता बढ़ने लगी और तनकीब ने उनकी ट्रेनिंग शुरू की। तनकीब ने बताया कि समीर ने अंडर-14 आयु वर्ग के पहले ही मैच में शतक जड़कर यूपीसीए के चयनकर्ताओं का ध्यान आकर्षित किया। 6 दिसंबर 2003 को मेरठ में जन्मे समीर दाएं हाथ के बल्लेबाज और ऑफ-ब्रेक गेंदबाज हैं।

अंडर-19 विश्व कप टीम के लिए मजबूत दावेदार होने के बावजूद चयन न होना उनके लिए एक बड़ा झटका था। हालांकि उन्होंने निराश होने के बजाय अपने प्रदर्शन पर ध्यान केंद्रित रखा। समीर को उनके खेलने के अंदाज के कारण 'दाएं हाथ का सुरेश रैना' भी कहा जाता है। 16 साल की उम्र में 2020 में उत्तर प्रदेश के लिए प्रथम श्रेणी पदार्पण करने वाले समीर आज सफेद गेंद के क्रिकेट में एक निडर मध्यक्रम फिनिशर के रूप में अपनी पहचान बना चुके हैं।

बलिया कोतवाली पुलिस ने अपहरण, दुष्कर्म और पॉक्सो एक्ट के एक वांछित आरोपी को गिरफ्तार

बलिया कोतवाली पुलिस ने अपहरण, दुष्कर्म और पॉक्सो एक्ट के एक वांछित आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर शुक्रवार को न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया। पुलिस के मुताबिक, उप निरीक्षक रंजीत विश्वकर्मा के नेतृत्व में गठित टीम ने मुखबिर की सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए आरोपी को शनिचरी मंदिर के पास से दबोच लिया। गिरफ्तार अभियुक्त की पहचान अमित कुमार उर्फ सोनू ठठेरा पुत्र पारसनाथ के रूप में हुई है, जो यारपुर बेदुआ, थाना कोतवाली, जनपद बलिया का निवासी है। बताया जा रहा है कि आरोपी के खिलाफ अपहरण, दुष्कर्म और पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज था और वह फरार चल रहा था। पुलिस ने गिरफ्तारी के बाद आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी करते हुए आरोपी को न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। पुलिस अधिकारियों ने कहा कि जिले में अपराध और अपराधियों के खिलाफ अभियान लगातार जारी रहेगा और किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा।

ए.एन.एम. महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता अपनी जायज मांगों को लेकर

● मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को घेरा ज्ञापन पर शीघ्र कार्यवाही की मांग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

शहडोल- ए.एन.एम. संवर्ग की मांगे समयमान वेतनवृद्धि डी.ए. एरियर्स. एच. आर. ए., टी. व्ही. आई. अन्य क्षेत्रों में टीकाकरण करने का 525रू. प्रति सत्र कटे हुए वेतन का भुगतान की बहाली एवं कई विन्दुओं पर सैकड़ों ए.एन.एम. कार्यकर्ता आज सायं 5.00 बजे मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय को घेरा मजबूर होकर जिला चिकित्सा अधिकारी मिश्रा को कार्यालय के समक्ष आकर विधि संवत ज्ञापन लेकर ज्ञापन पर निराकरण की बात कहीं।

ए.एन.एम. का आरोप है कि विभाग के अन्य कैडर का वेतन नही काटा जाता, केवल हमी लोगों को वेतन क्यो काटा जाता है, इस तरह का सौतेला व्यवहार वर्तमान सी.एम.एच.ओ. द्वारा करना न्याय संगत नही है। ज्ञापन में यह भी कहा गया है कि आप द्वारा अनाधिकृत रूप से मानसिंक व आर्थिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है, जबकि विभाग के सभी लक्ष्य और राष्ट्रीय कार्यक्रम की पूर्ति केवल ए.एन.एम. के द्वारा की जाती है। टीकाकरण एच.पी.व्ही. वेक्षिनेषन से लेकर

सभी कार्य सम्पादित किया जाता है, इसके बावजूद भी 15-20 दिन का वेतन काटा जाता है, ए.एन.एम. को मानसिक एवं आर्थिक रूप से प्रताड़ित किया जाना उचित नही है। आज के ज्ञापन में 07 दिवस के अन्दर भुगतान एवं अन्य मांगों का निराकरण न किया गया तो ए.एन.एम. अनिष्चित कालीन हड़ताल पर चली जाएगी, जिसकी जिम्मेदारी जिला प्रषासन के साथ मुख्य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी की होगी। ज्ञापन सौपते समय अंजनी सोनवानी अध्यक्ष, सावित्री सिंह, जिला सचिव, रेखा ज्ञान चंदानी कोषाध्यक्ष सावित्री सिंह उईके, कुसुम वर्मा, सुनीता तिवारी उपाध्यक्ष, प्रभा सिंह, ललित सिंह मार्को सह सचिव, राजकुमारी टांड़िया, जयंती संत, मीडिया प्रभारी प्रतीक्षा दुबे प्रवक्ता, अम्बेष्वरी सिंह, सत्यरूपा पटेल, चित्रलेखा सोनी, गिरजा सिंह, संध्या त्रिपाठी, देवकी राठौर, उर्मिला प्रजापति, ज्ञान प्रभा सिंह, जिला कार्यकारणी सदस्य के साथ सैकड़ों ए.एन.एम. कार्यकर्ता उपस्थित रही।

संकुल केंद्र करकटी में 'प्रवेश उत्सव' का भव्य आयोजन

● शिक्षा की अलख जगाने जुटे ग्रामीण और जनप्रतिनिधि

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

शहडोल 01 अप्रैल, 2026 शिक्षा के नए सत्र का आगाज उत्साह और उमंग के साथ करने के उद्देश्य से आज संकुल केंद्र करकटी में 'प्रवेश उत्सव' का गरिमामयी आयोजन किया गया। शासन के निर्देशानुसार आयोजित इस कार्यक्रम का मुख्य ध्येय नव-प्रवेशी छात्र-छात्राओं का स्वागत करना और समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाना रहा। कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधियों, शिक्षकों, अभिभावकों और नन्हे-मुन्ने बच्चों की उपस्थिति ने विद्यालय परिसर को उत्सव के रंग में सराबोर कर दिया।

अतिथियों का स्वागत और दीप प्रज्वलन

कार्यक्रम का शुभारंभ भारतीय परंपरा के अनुरूप माँ सरस्वती के पूजन और दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में स्थानीय सरपंच कौशल्या बैगा उपस्थित रहीं। वहीं, विशिष्ट अतिथि के रूप में Educate girls संस्था से प्रतिनिधि रामनिवास कुशवाहा ने शिरकत की। विद्यालय परिवार द्वारा अतिथियों का पुष्पगुच्छ और तिलक लगाकर आत्मीय स्वागत किया गया।

शिक्षा ही विकास की पहली सीढ़ी:

संकुल प्राचार्य राजेश मिश्रा

मुख्य अतिथि श्रीमती कौशल्या बैगा ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी समाज या क्षेत्र का विकास केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने विशेष रूप से जनजातीय क्षेत्रों में बालिकाओं की शिक्षा पर जोर देते हुए कहा: 'आज के दौर में बेटा और बेटी में कोई भेद नहीं है। एक शिक्षित बेटी दो घरों को रोशन करती है। सरपंच होने के नाते मेरा प्रयास रहेगा कि करकटी संकुल के अंतर्गत आने वाले हर घर का बच्चा स्कूल पहुँचे और अपनी प्रतिभा को निखारे। 'उन्होंने अभिभावकों से अपील की कि वे खेती-किसानी और मजदूरी के कामों के बीच बच्चों की पढ़ाई को प्रभावित न होने दें और उन्हें नियमित स्कूल भेजें।

विद्यार्थियों के जीवन में अनुशासन का महत्व रामनिवास कुशवाहा

विशिष्ट अतिथि educate girls संस्था से श्री रामनिवास कुशवाहा ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें जीवन में लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि छात्र जीवन वह आधारशिला है, जिस पर भविष्य की इमारत खड़ी होती है।

उन्होंने अपने संबोधन में कहा, '1 अप्रैल केवल कैलेंडर की तारीख नहीं, बल्कि उन बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की शुरुआत है जो आज पहली बार स्कूल की दहलीज पर कदम रख रहे हैं। सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाएं और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर जिले व प्रदेश का नाम रोशन करें।' उन्होंने शिक्षकों से भी आग्रह किया कि वे बच्चों को किताबी ज्ञान के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी प्रदान करें। कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाने में संकुल के जनशिक्षको और वरिष्ठ शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस अवसर पर जन शिक्षक एवं दीप नारायण पाठक विशेष रूप से उपस्थित रहे। साथ ही शैक्षणिक स्टाफ में शामिल रवि शंकर द्विवेदी, विप्रण वति सिंह,सविता सोनी अंजना माझी,पुष्प लता कुशवाहा, प्रभा मिश्रा, विमला पटेल उपस्थित रहे।

आनंद विहार में देश का बड़ा फास्ट ईवी चार्जिंग स्टेशन शुरू, 10 इलेक्ट्रिक वाहनों को 30 मिनट में कर सकता है चार्ज

पूर्वी दिल्ली। यमुनापार के आनंद विहार स्टेशन पर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) द्वारा इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) चार्जिंग के लिए 480 किलोवाट क्षमता वाली 10 हाई-वोल्टेज चार्जिंग यूनिट लगाई गई हैं। इसके लगने से आसपास के क्षेत्रों सहित यात्रियों को भी पुरा लाभ मिलेगा। यह चार्जिंग स्टेशन एक ही समय में 10 इलेक्ट्रिक वाहनों को तेज़ी से व बैट्री को आधे घंटे में 80 प्रतिशत तक चार्ज करने में सक्षम है। यह चार्जिंग स्टेशन अब तक का सबसे बड़ा फास्ट ईवी स्टेशन है।

एप की मदद से आसान होगा काम

इलेक्ट्रिक वाहन इस्तेमाल करने वाले लोग इलेक्ट्रीफाई मोबाइल एप्लिकेशन की मदद से इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। इस एप को गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता। स्लाट बुक करने के बाद ई-वाहन को कुछ ही मिनटों में चार्ज किया जा सकता हैं। इस एप के जरिए उपयोगकर्ता अपने वाहन की चार्जिंग स्थिति की रीयल-टाइम मानिटरिंग कर सकते हैं और डिजिटल माध्यम से आसानी से भुगतान भी कर सकते हैं।

8 स्टेशनों पर ई-वाहन चार्जिंग की सुविधा उपलब्ध

आनंद विहार में इस सुविधा के आरंभ होने के साथ ही अब साहिबाबाद, गुलधर, दुहाई, मुरादनगर, मोदीनगर साउथ, मोदीनगर नार्थ और मेरठ साउथ सहित कॉरिडोर के कुल 8 स्टेशनों पर ई-वाहन चार्जिंग की सुविधा उपलब्ध हो गई है। इन स्टेशनों पर फास्ट और सामान्य दोनों श्रेणी के चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए गए हैं।

'ऐश्वर्या अपना ख्याल खुद रख...' आराध्या की परेंटिंग को लेकर बोले अभिषेक बच्चन

● अभिषेक आराध्या के लिए बनना चाहते हैं आदर्श उदाहरण

● पेरेंटिंग में कुछ भी तय नहीं होता

● बच्चे देखकर सीखते हैं- अभिषेक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। अभिषेक बच्चन अपनी पर्सनल लाइफ को ज्यादा शेयर नहीं करते। हालांकि उन्हें अक्सर पेरेंटिंग पर बात करते हुए देखा गया है। अभिषेक ने कई बार इस पर बात की है कि वो और ऐश्वर्या कैसे मिलकर आराध्या का ख्याल रखते हैं।

आराध्या की कैसे करते हैं परवरिश?

लिली सिंह से बातचीत में अभिषेक ने इस पर और गहराई से बात की। एक्टर ने बताया कि पेरेंटिंग को लेकर उनके और ऐश्वर्या के बीच में कोई प्री-डिफाइंड रोल नहीं है। उन्होंने कहा कि सिर्फ इसलिए कि वह एक पुरुष हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि केवल वही आराध्या को आत्मरक्षा करना सिखा सकते हैं, ऐश्वर्या भी ऐसा कर सकी हैं क्योंकि वो भी उतनी ही सक्षम हैं।

एक्टर ने ऐश्वर्या को बताया सक्षम

अभिषेक बच्चन ने कहा, 'हमारे घर में, माता-पिता के रूप में हम दोनों आराध्या को सही-गलत बताने के बजाय उसके लिए एक आदर्श उदाहरण बनने की कोशिश करते हैं। हमारा मानना है कि खुद वैसा बनकर दिखाना ही सबसे अच्छा है। हमने कभी ऐसा नहीं सोचा कि 'मैं उसे आत्मरक्षा सिखाऊंगा।' अगर आपने मेरी पत्नी को देखा होगा, तो वह अपना ख्याल खुद रख सकती है। हमने कभी यह नहीं सोचा कि 'मैं उसे आत्मरक्षा सिखाऊंगा, तुम (ऐश्वर्या) उसे दूसरों के प्रति सहानुभूति रखना सिखाओ।' नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है। '

बच्चा देखकर सीखता है – अभिषेक

उन्होंने आगे कहा, 'यह बस अपने मूल्यों और नैतिकता के साथ एक अच्छा, ज़िम्मेदार जीवन जीने के बारे में है। आपका बच्चा इसे देखता है और इसी से सीखता है। इसी तरह आप उसे तैयार करते हैं। इसलिए घर में इस बात की कोई होड़ नहीं होती कि कौन मर्द बनेगा और कौन औरत। बच्चों के मामले में, हम दोनों का मानना है कि आपको उदाहरण पेश करना आना चाहिए, न कि उन्हें सही-गलत सिखाने की कोशिश करनी चाहिए। क्योंकि जो हमारे लिए सही है, वह उनके लिए सही नहीं हो सकता। पीढ़ियां बदलती हैं। हमारी दुनिया बहुत अलग है, और हमारे बच्चों की दुनिया तो और भी अलग होगी। '

अभिषेक की आने वाली फिल्में

एक्टर के वर्कफ्रंट की बात करें तो अभिषेक बच्चन बहुत जल्द रितेश देशमुख निर्देशित ऐतिहासिक ड्रामा 'राजा शिवाजी' में नजर आएंगे। ये उनका मराठी सिनेमा में भी डेब्यू होगा। फिल्म 1 मई 2026 को रिलीज होगी। इसके अलावा, वह शाहरुख खान के साथ सुजॉय घोष की थ्रिलर फिल्म 'किंग' में एक विलेन की भूमिका में दिखाई देंगे, जो दिसंबर 2026 के आसपास आ सकती है।